

साकार प्रगट ब्रह्म को जो पहचाने, वो परम को पाये

वर्ष 45 अंक 1

21.02.2022 सोमवार (जनवरी-फरवरी)

वार्षिक शुल्क : ₹ 111.00

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली द्विमासिक सत्संग पत्रिका



भगवत् कृपा

योगीबाबा को करोड़ों धन्यवाद, काकाजी हमें भेंट दिये...

निजात्मानं ब्रह्मरूपं देहत्रयविलक्षणम् । विभाव्य तेन कर्णध्या श्रीजी भक्तिस्तु सर्वदा ॥

22 दिसंबर 2021 ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामीजी के समाधि स्थल पर दर्शन-प्रदक्षिणा...



गुणातीत समाज के अविस्मरणीय पर्व...

3 फरवरी गुणातीत समाज के आध्यात्मिक इतिहास का अद्वितीय दिन है! क्योंकि **गुरुहरि योगीजी महाराज** ने तब संकल्प किया था कि गुणातीतभाव को पाये अपने संतों के द्वारा धरा पर अखंड रहने का भगवान स्वामिनारायण ने जो वरदान दिया है, उसकी प्रतीति संबंध में आने वाले ज्ञानी-अज्ञानी सभी को कराने, उन्हें मूर्ति का सुख दूँ।

पर, ऐसे विरल कार्य के लिये कोई शूरवीर पात्र तो चाहिये न! सो, उन्होंने अनादि के ऐसे महामुक्त को चुना और वे थे **प.पू. काकाजी!**

छोटी आयु में ही उन्होंने **गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज** के मुख से सुना था —

जिसे प्रभु की मूर्ति का सुख प्राप्त करना हो, वह मर कर आये।

अर्थात् स्थूल, सूक्ष्म और कारण शरीर के भावों से पर होकर आए। वाकई असाधारण हेत का स्वरूप प.पू. काकाजी ऐसे ही थे। बाह्य दृष्टि से वे किसी भी क्रिया में संपूर्णतया ओतप्रोत दिखाई देते। लेकिन, वह पूरी होने के बाद उसका तनिक भी पाश उनमें दिखाई नहीं देता। जैसे कि जब वे व्यापार करते थे, तो उसमें इतने मशगूल दिखते कि ऐसा लगता कि इसमें से वे कभी बाहर ही नहीं आयेंगे। लेकिन, प.पू. बापा के वचन से श्री गुलजारीलाल नंदाजी के चुनाव प्रचार के लिये जब जाना हुआ, तो व्यापार को एक ओर रख कर, ऑफिस के पूरे स्टाफ के साथ वे उस सेवा में जुट गये। फलस्वरूप खूब राजी होकर प.पू. बापा ने उन्हें प्रभु का साक्षात्कार कराया, जिसमें उन्होंने प.पू. बापा में असली नारायण को देखे।

आज यह सब कहना या लिखना आसान है, पर सोचें कि ऐसी स्थिति में क्या हम अपनी महत्ताओं को छोड़ कर ऐसा कर पायेंगे?

यूँ तो प.पू. काकाजी का संपूर्ण जीवन, उनकी प्रत्येक क्रिया हम सभी के लिये आदर्श रूप हैं, पर साक्षात्कार के इस प्रसंग पर प्रार्थना करें कि **जैसे प.पू. काकाजी ने अपने ईष्टदेव से अतिशय प्रीति की, वैसे हम भी अपने प्रत्यक्ष स्वरूप से कर पायें।**

प.पू. काकाजी के साक्षात्कार दिन के तुरंत बाद ही आई **5 फरवरी — बसंतपंचमी** की मंगल तिथि भी **भगवान स्वामिनारायण** द्वारा इसी दिन रचित **शिक्षापत्री** और **गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज के प्रादुर्भाव** के कारण पूरे स्वामिनारायण



संप्रदाय एवं अक्षरपुरुषोत्तम संस्था व गुणातीत समाज के लिये अत्यंत महत्त्वपूर्ण है।

गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज की निष्काम भक्ति और अडिग साधना का परिणाम है कि अनेक विघ्न और कष्ट सहन करके, उन्होंने अक्षरपुरुषोत्तम की शुद्ध उपासना व्यापक करने बोचासण में सर्वप्रथम श्री अक्षरपुरुषोत्तम की मूर्ति स्थापित की। फलस्वरूप श्रीजी महाराज एवं अनादि मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामीजी के पृथ्वी पर अवतरित होने का हेतु उजागर हुआ। प्रबल सत्यनिष्ठ **गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज** ने जब जीव को उच्च ब्राह्मीस्थिति का एहसास करवाने के लिये युगल उपासना का बिगुल बजाया, तब एक हरिभक्त ने उनसे कहा—

‘आपका प्रभाव और प्रकाश देख कर कई मुमुक्षु आपकी ओर आकर्षित होते हैं। पर, कइयों को आपके प्रति राग-द्वेष है, सो वे आपके लिये परेशानी खड़ी करें, ऐसा प्रतीत होता है।’

तब **गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज** ने कहा था—

‘हम यदि किसी क्रिया से बंधे होंगे, तो उसका भार हमें लगेगा। लेकिन कर्ता-हर्ता यदि श्रीजी महाराज को समझेंगे, तो महाराज हम पर आँच भी नहीं आने देंगे। फिर भी यदि कोई दुःख आये, तो समझना कि श्रीजी महाराज कसौटी कर रहे हैं और शुद्ध कंचन जैसा हमें बनायेंगे।’

गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज के उपरोक्त अभय वचन केवल शुद्ध उपासना के संदर्भ में नहीं, बल्कि अध्यात्म जीवन जीते सभी श्रेयार्थी साधकों के लिये दीपस्तंभ के समान हैं। बाह्य जगत तो सत्पुरुष सहज ही छुड़ा देते हैं, लेकिन जब अंतर्जगत उथल-पुथल मचाये-तांडव करे, तब हमें दिखती परेशानियों का नियंता प्रभु को मान कर, एक मात्र भजन का उपाय लें, ऐसी गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज की प्राकट्य तिथि पर दो हाथ जोड़ कर प्रार्थना करें और...

साथ ही साथ **15 फरवरी** स्वरूपनिष्ठा व माहात्म्य भक्ति के स्वरूप

प.पू. अक्षरविहारीस्वामीजी के प्राकट्य पर्व पर उनसे याचना करें कि

संपूर्ण समर्पण करके जिस प्रकार आपने

भक्त का मित्र बन कर,

भक्त का सहृदयी बन कर,

भक्त के हृदय में स्थान लेकर,



भक्त का हितैषी बन कर,
भक्त का निजी बन कर,
भक्त को अपनत्व देकर,
भक्त का भक्त बन कर,

प्रभुधारक संत स्वरूपों—प.पू. योगीबापा, प.पू. काकाजी, प.पू. पप्पाजी, प.पू. महंतस्वामीजी, प.पू. हरिप्रसादस्वामीजी के अंतर की प्रसन्नता पाई, ऐसी भक्ति की लौ हमारे भीतर में प्रज्वलित करने हम सक्षम बनें—ऐसा नम्र निवेदन करते हुए, मांगलिक पर्वों निमित्त आशिष प्राप्त करने **प.पू. काकाजी** के निम्न आशीर्वाद बार-बार पढ़ें। क्योंकि प.पू. काकाजी अक्षरधाम की विरल विभूति थीं; सो उनकी प्रत्येक क्रिया और परावाणी इस लोक की तो थी ही नहीं, जिसे हम हमारी मायिक बुद्धि से समझ भी पायें। लेकिन, वे इतने दयालु हैं कि हमारी सुरुचि देख कर हमें सूझ दे ही देंगे।

पातंजल योग के अनुसार ‘चित्तवृत्ति का निरोध’ अष्टांगयोग का फल है।

साकार और निराकार दोनों प्रकार की उपासना करने वाले सविकल्प समाधि द्वारा निर्विकल्प समाधि सिद्ध कर सकते हैं।

लेकिन उनके दोष और अहंभाव निर्मूल नहीं होते।

भगवान के संबंध वाले ये भक्त, निर्गुण होने के बावजूद, स्वभावयुक्त ही वर्तते हैं।

उनकी मूल वृत्ति या अज्ञान टलता नहीं है।

जबकि, **गुणातीत ज्ञान** की सर्वश्रेष्ठ विशेषता यह है कि—

प्रगट भगवान या उन्हें आत्मसात किये हुए

संत के प्रति सद्भाव रखने से जीव निर्वासनिक हो जाता है

और

बड़े पुरुष के वचन से भजन, भक्ति व सेवा करते हुए,

जीतेजी ही एकांतिक धर्म भी सिद्ध कर लेता है।

ज्ञानप्रलय का ये भजन सच्चे भगवदी के वचन और प्रसंग से

स्वरूप की स्मृति रखने वाले को सिद्ध होता है।



ऐसा अखंड दिव्य जाग्रतता का योग अंततः ज्ञानसमाधि में परिवर्तित हो जाता है।

प्रगट के प्रति गुणातीत ज्ञान की दृढ़ निष्ठा करने के लिये

मुक्तों को तीन कसौटियों में से गुज़रना पड़ता है।

प्रथम कसौटी में—

प्रगट की यथार्थ रूप से पहचान और निष्ठा की कसौटी—जिसमें लोक, भोग, देह के संबंध और पक्ष अंतराय करा कर देश-काल लगा देते हैं। अतः उसे निरंतर जाग्रत रहना पड़े।

आगे जाते, दूसरी कसौटी में—

अव्यक्त रागों और संकल्प की बीमारी (अर्थात्—इच्छाओं, कामनाओं व कल्पनाओं के रोगों को) ढालना शेष रहता है। इस भूमिका में बुद्धि, आत्मनिष्ठा, वैराग्य, तप, त्याग, स्वधर्म या किसी भी प्रकार का गुण अथवा क्रिया का अहं आड़े आता है और प्रगट स्वरूप की ही अनुवृत्ति के अनुरूप जीवन जीने में अंतराय उत्पन्न करता है। तब मुक्तभाव की मानरूपी महामाया बाधा डालती है। यह भी स्वरूप की स्मृति रख कर और एकांतिक का प्रसंग एवं उनकी सेवा व समागम करने से निर्मूल हो जाती है।

अंतिम तीसरी कसौटी में—

मूल अज्ञान या मूल प्रकृति के सहजता से टलने पर, वृत्तियों के निर्मूल होने से महिमा का साक्षात्कार सिद्ध होता है। तब समग्र सत्संग दिव्य माना जाता है और स्वयं अक्षरधाम के सुख का जीतेजी अनुभव, अनुभूति प्राप्त करके अन्यो को भी प्रदान कर सकते हैं। फलस्वरूप, आठों प्रहर अहोहोभाव, पूर्णता, कृतार्थता महसूस होती है और किसी का भी अभाव-अवगुण दिखाई नहीं देता और विक्षोभ या उदासी टिक नहीं पाती। निर्दोषबुद्धि रख कर, केवल गुरुमुखी वर्तने वाले साधक के लिये यह सरल व सुगम होता है।

ऐसा साक्षात्कार गुरुहरि की कृपा से, ऐसी ज्ञानसमाधि के रूप में, सब श्रेयार्थी साधकों को शीघ्र सिद्ध हो यही अभ्यर्थना।

— गुरुहरि काकाजी महाराज, मार्च 1969



24 दिसंबर 2021
सांकरदा मंदिर के दर्शनार्थ...



25 दिसंबर 2021

गुरुहरि पय्याजी महाराज के 105वें प्राकट्योत्सव निमित्त संतों-भाइयों की सभा



‘गुरुहरि पप्पाजी स्मृति सौरभ उत्सव’ पर
स्वस्वयीं-संतों का अभिवादन...



26 दिसंबर 2021

‘गुरुहरि पय्याजी स्मृति सौरभ उत्सव’ निमित्त बहनों द्वारा भाव अर्पण...



अमदावाद में यू. विपुलभाई ठक्कर के डिज़ाईनर स्टूडियो पर पधरामनी...



अमदावाद—हेतवी टॉवर्स
प.पू. गुरुजी एवं प.पू. वशीभाई की निश्रा में आनंदीब्रह्म...



हेतवी टॉवर्स में स्मृतियाँ एकत्र करते भक्त...



पू. मेहुलभाई ठक्कर के घर प.पू. दीदी की पधरामनी...



पू. शैलेशभाई शाह की 'बेकरी शॉप' पर प.पू. दीदी की पधरामनी...



‘गुरुहरि पप्पाजी स्मृति सौरभ’ की दिव्य स्मृतियाँ...

वर्ष 2021 की क्रिसमस व दिनांक 26 ने गुणातीत समाज के मुक्तों को दिव्य विभु गुरुहरि पप्पाजी की स्मृतियों एवं प्रगट स्वरूपों के आशीर्वाद से निहाल कर दिया।

गुरुहरि पप्पाजी के 105वें प्राकट्योत्सव हेतु प.पू. गुरुजी 24 दिसंबर को ‘पप्पाजी तीर्थ’ पर जाने वाले थे, लेकिन 22 दिसंबर को प.पू. शास्त्रीस्वामीजी की तबियत अत्यधिक खराब होने के कारण, प.पू. गुरुजी इसी रात को संतों व युवकों के साथ वहाँ पहुँच गये और... प.पू. शास्त्रीस्वामीजी ने देहत्याग कर दिया।

सो, 23 को उनकी अंत्येष्टि विधि और प्रार्थना सभा के बाद 24 की सायं सांकरदा मंदिर दर्शन करके, रात्रि को अनुपम मिशन पहुँचे। यहाँ प.पू. अश्विनभाई एक सेवक की अदा से स्वागत के लिये उपस्थित थे।

25 की सुबह ‘पप्पाजी तीर्थ’ पर सुशोभित रथ में विराजित गुरुहरि पप्पाजी की मूर्ति के पीछे, फूलों से सजी गाड़ियों में प्रत्यक्ष स्वरूपों एवं सद्गुरु संतों ने सभा मंडप में प्रवेश किया। उनका स्वागत करते हुए स्वरवृंद ने ‘आव्या तमे अहीं आज, मानो पधार्या स्वयं महाराज’ भजन प्रस्तुत किया।

सभा की शुरुआत में गुरुहरि पप्पाजी के वचनों की स्मृति करते हुए मुक्तों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम करके भक्ति अदा की।

तत्पश्चात् स्वरूपों एवं गणमान्य संतों का मंच पर उत्सव का बॅच और हार अर्पण करके सम्मान किया गया। सभा के प्रारंभ में पू. विरेनभाई ने स्मृति सौरभ गान में गुरुहरि पप्पाजी के आध्यात्मिक कार्यों पर प्रकाश डालते हुए कहा—

...पप्पाजी स्थूल रूप से पंद्रह साल से नहीं हैं। पर, सारे समाज को यह कमी महुसस नहीं होने दी। जब तक पप्पाजी देह से थे, तो सभी उनके स्वरूप में निमग्न थे। लेकिन, अब देहत्याग के बाद पूर्ण रूप से व्यापक दिखाई देते हैं। पप्पाजी जो सुख देते हैं, लाइ पूरे करते थे, फिलहाल वैसा ही कार्य दिखाई दे रहा है... वे हमारे अंतर में ऐसे बैठे कि हमें अविरत सुखी कर रहे हैं... पप्पाजी का वारसा रख सकें, ऐसा हम जीवन जियें और उनका ऋण अदा करें...

अनुपम मिशन के वरिष्ठ सद्गुरु प.पू. शांतिभाई साहेब ने गुरुहरि पप्पाजी की स्मृतियाँ करते हुए मार्गदर्शन दिया—

...आज हम पप्पाजी का स्मृति पर्व मना रहे हैं। इस ब्रह्मांड में एक दिव्य पुरुष



के रूप में वे पधारे और जीवों को प्रगट की उपासना समझा कर सच्चा दास बनाया। इनकी स्मृति करते हैं, तो ख्याल पड़ता है कि वे जीव व आत्मा के साथ अपना संबंध देते थे। जिन स्वरूप से हम जुड़े हैं, उनके प्रति रंचमात्र भी मनुष्यभाव न रहे, संपूर्ण दिव्यभाव ही रहे, तो ही हम दिव्य, निर्दोष व सबके दास बन पाएंगे और प्रभु हमारी आत्मा व रोम-रोम में अखंड बस जाएंगे। इस ज्ञान का प्रसार काकाजी-पप्पाजी ने जीवनपर्यंत किया है।

हम मानें कि ऐसे दिव्य पुरुष प्रगट व प्रत्यक्ष हैं। ऐसे परम तत्त्व कभी विलीन नहीं होते।

यह सनातन उपासना की बात है

श्रीजी उपदेशामृत में एक बात है—

जो हमारे भक्त को दिव्य व निर्दोष मान कर, दासभाव से उसकी सेवा करता है, वह हमें प्रिय है।

महाराज ने इसी सिद्धांत का प्रवर्तन किया है। इसी प्रकार गुणातीतानंदस्वामी, शास्त्री महाराज, योगीजी महाराज, भगतजी महाराज, जागास्वामी, कृष्णजी अदा और वर्तमान समय में भी काकाजी, पप्पाजी, प्रमुखस्वामी, महंतस्वामी, हरिप्रसादस्वामी, अक्षरविहारीस्वामी, साहेबजी, गुरुजी, निर्मलस्वामी, प्रेमस्वामी, दिनकर अंकल, भरतभाई, वशीभाई, अश्विनभाई ने समाज में प्रवर्तया है।

आज का यह दिन पप्पाजी की स्मृतियों को हृदयस्थ करने का दिन है। हृदयस्थ यानि—**सभी भक्तों के प्रति महिमा का भाव स्वयं रख कर वे जीने की जो कला सिखा गये हैं, वह हमारे रोम-रोम में हमेशा रहे।**

तत्पश्चात् गुणातीत समाज के सभी केन्द्रों के प्रतिनिधियों द्वारा गुरुहरि पप्पाजी की मूर्ति को पुष्प हार अर्पण करने के बाद, लंदन के पू. दिलीपभाई भोजाणी ने विडियो द्वारा अपने हृदय उद्गार व्यक्त किये—

...हम इंग्लैंड वाले खूब नसीबदार हैं कि पप्पाजी यहाँ आये, तो धीरे-धीरे उन्होंने सबके दिल में स्थान लिया। अपने सान्निध्य-सामीप्य का सुख दिया। हमें मार्गदर्शन देते हुए बताया कि भगवान मिलने के बाद हमें कैसा होना चाहिये! हमारा चरित्र और अनुशासन कैसा होना चाहिये! महामानव किस प्रकार बन सकते हैं। स्वभाव किस प्रकार विलीन करके सुख प्राप्त कर सकते हैं, उसकी सूझ दी... खुद गरजू होकर बताया कि ऐसा करोगे, तो सुख मिलेगा।

हम पर किसी प्रकार का दबाव नहीं डाला... पप्पाजी सोलह बार इंग्लैंड पधारे, तो उनका स्वरूप पहचानने की उमंग जगी... **जिसे जैसा पसंद था, वैसे उसके**



साथ संबंध करके, पथरामनी करके सबको खूब सुख दिया। महामानव का एक समाज खड़ा कर दिया। काकाजी, पप्पाजी और बा ने एक अद्भुत समाज स्थापित कर दिया...

पप्पाजी का कार्य आज भी बहनों, व्रतधारी भाइयों द्वारा जारी ही है... इतना समझ में आ गया है कि महाराज और पप्पाजी का माहात्म्य जानने के सिवा और कुछ करने जैसा ही नहीं है। बहुत शुरुआत में साहेब कहते थे कि तुम्हें यदि ख्याल पड़ जाये कि पप्पाजी कौन हैं, तो तुम बावले हो जाओ कि क्या प्राप्ति हुई है। आज सबको पूरा ख्याल आ गया है। इतने साल देह को गिने बिना पप्पाजी ने खूब परिश्रम किया है... **बहुत कथा नहीं की, लेकिन अपने वर्तन से उन्होंने सबको बहुत कुछ सिखाया है, जो आज भी हमें काम आता है कि किस प्रकार जीवन जीना है...** पप्पाजी से इतनी प्रार्थना है कि आपका माहात्म्य समझने में कहीं चूक न हो जाये। आपने जो ज्ञान दिया है, उसे समझने में कहीं नासमझी न हो जाये... व्यापक स्वरूप में आप हाज़िर ही हैं। हम आपके हैं इसलिये आपके मार्गदर्शन में हमें चला रहे हैं, आपका कार्य आप जारी ही रखना और हम हमारी तरफ से उमंगभरी 'जी हजूरी' करते रहें...

पू. दिलीपभाई भोजाणी के अनुभव दर्शन के बाद, **प.पू. निर्मलस्वामीजी** ने आशीर्वाद दिया — ...हम **मौज में रहें, तो ही भगवान मिलते हैं, वर्ना नहीं मिलते।** वर्षों पहले बापा ने हमें पप्पाजी, काकाजी और हरिप्रसादस्वामीजी का समागम करने की आज्ञा करी थी...

हमें अब जो करना है, वह करने लग पड़ें। **तुम्हारे पास पचास लाख का मोबाइल फोन भले हो, पर उसमें टावर नहीं होगा और फोन कवरेज से बाहर होगा, तो तुम क्या कर सकोगे? जबकि हमारे पास गुणातीत स्वरूपों के रूप में टावर और कवरेज दोनों हैं और हमें उसका उपयोग करना है...** हम सब आनंद में रहते हैं, कोई कसनी नहीं है। **हमारे लिये ये पुरुष जो कर गये हैं, वो सामान्य बात नहीं है...** भगवान ने पूजन करने के लिये बहुत कंकु और अक्षत दिया है, लेकिन हमें काकाजी, पप्पाजी, स्वामीजी, साहेब का सेवन करना है। **पूजन तो कड़ियों का होता है, लेकिन सेवन तो एक का ही होता है।**

यूँ देखें कि पप्पाजी ने योगीजी महाराज को राज़ी करने के लिये कितना परिश्रम किया है। उसी का दर्शन आज हमें होता है... महाराज के समय से सांख्य योगी बहनें हैं। उसी प्रकार वह कार्य गुणातीत समाज में योगीजी महाराज के द्वारा हुआ, इसका मैं साक्षी हूँ...

तत्पश्चात् गुरुहरि पप्पाजी के प्राकट्योत्सव निमित्त केक अर्पण का विशिष्ट कार्यक्रम हुआ। मंचस्थ स्वरूपों एवं संतों के समक्ष एक-एक केक रखा गया, जिसकी प्रत्येक मोमबत्ती पर 'पू. पप्पाजी स्मृति सौरभ उत्सव' का एक-



एक अक्षर लिखा हुआ था। सभी ने एक साथ मोमबत्तियाँ प्रज्वलित करके केक का प्रसाद वितरित किया और **गुरुहरि पप्पाजी** द्वारा निरूपित भजनों की पॅन ड्राईव 'सुर सौरभ' का अनावरण करके **संतभगवंत साहेबजी** ने आशीर्दान दिया —

...गुणातीतभाव प्रगटाने का श्रेष्ठ उपाय यही है कि हमें मिले प्रगट सत्पुरुष की दिव्य स्मृति का स्मरण करें। भगवान की कृपा और बड़े सत्पुरुष के आशीर्वाद से ऐसे दिव्य पुरुषों के सान्निध्य में रहने का सौभाग्य प्राप्त होता है। स्वामिनारायण भगवान अपने संग गुणातीतानंदस्वामी को लेकर आए। गुरुदेव शास्त्री महाराज व योगीजी महाराज ने अक्षरपुरुषोत्तम की शुद्ध उपासना द्वारा हर एक जीव को गुणातीतभाव प्रकटाने का श्रेष्ठ व आनंददायक मार्ग बताया। **बापा ने जिन्हें-जिन्हें काकाजी, पप्पाजी, स्वामीजी व महंतस्वामीजी से जोड़ा, उनके लिये अक्षरपुरुषोत्तम की उपासना समझनी सरल हो गई।** योगीजी महाराज की हम पर दृष्टि पड़ी और खूब कृपा करके शुरुआत में प्रभुदासभाई (हरिप्रसादस्वामीजी) का जोग कराया। 1957 से 1964 तक उन्होंने हमारा जतन किया। बापा को राजी करने की सूझ दी। बापा, काका और पप्पा का माहात्म्य समझाया। बापा ने काकाजी से जोड़ा, काकाजी ने पप्पाजी से जोड़ा। **काकाजी और पप्पाजी के प्रति विशेष सम्यक् निर्दोषभाव रहा, उसका मुख्य श्रेय हरिप्रसादस्वामीजी को जाता है...** आध्यात्मिक उत्थान व समाज की प्रगति माया से सहन नहीं होती, सो वह बाधा उत्पन्न करती है। पर, माया विषम होने पर हम काकाजी, पप्पाजी, स्वामीजी व महंतस्वामीजी के मार्गदर्शन पर चले, तो माया हमें पराजित नहीं कर पाई। भगवान स्वामिनारायण ने वचनामृत में, गुणातीतानंदस्वामी ने स्वामी की बातों में व योगीजी महाराज ने योगीगीता व सुनृत में जो बातें करीं, उसका जीवंत दर्शन हमें काकाजी, पप्पाजी, स्वामीजी व महंतस्वामीजी के जीवन से हुआ। अब यही दर्शन हमें गुरुजी, निर्मलस्वामी, दिनकरभाई, भरतभाई, वशीभाई, शांतिभाई, अश्विनभाई, हंसा दीदी व देवी बहन करा रहे हैं। 1966 में पप्पाजी गुणातीत ज्योत में आए। पप्पाजी के लिए ऐसा सुना था कि वे काफ़ी रिजर्व व गंभीर पुरुष हैं। परंतु उनके सान्निध्य में रह कर एहसास हुआ कि वे तो अलौकिक पुरुष हैं, सामान्य नहीं हैं। पप्पाजी बहुत प्रेमालु थे व अकल्पनीय प्रेम बरसाते थे।

एक प्रसंग याद आता है। पप्पाजी ताड़देव में विराजमान थे, तब कांदिवली में सत्संग सभा थी और महंतस्वामी की आज्ञा से एक भक्त कथा-वार्ता कर रहे थे। उन्हें भगवद्गीता के श्लोक व शास्त्र की अधिक जानकारी नहीं थी। उस सभा में



गोरधनकाका के मामा—फड़ीया मामा मौजूद थे। वे बहुत विद्वान थे व उन्हें शास्त्रों का ज्ञान था। काकाजी से बात करने हेतु उन्होंने रात को ताड़देव फोन किया। पप्पाजी ने फोन उठाया और बताया कि काकाजी बापा के साथ हैं। सो, पप्पाजी से उन्होंने कहा कि आज शाम को सभा में जिसे बात करने को कहा, उसे न तो गीता की जानकारी थी और न ही संस्कृत व शास्त्र की समझ। ऐसे लोगों से क्यों बातें कराते हो?

पप्पाजी ने तो फड़ीया मामा को खड़काते हुए कह दिया था— आप अपने आपको क्या समझते हो? साल में एक बार तो सभा में जाते हो और जो महंतस्वामी की आज्ञा से नियमित सभा करते हैं, उनके खिलाफ़ बोलने वाले तुम कौन होते हो?

पप्पाजी जब पहली बार इंग्लैंड पधारे थे, तब एयरपोर्ट पर उन्होंने हमें कहा कि— **बहनों से कंठी और कोठारीस्वामी से माला ली है, शांतिभाई से समर्पित सेवकों का बैच लिया है और मेरी ड्रेस गृहस्थ की है। तो, संतों, संत भाइयों, बहनों व गृहस्थों—चारों का दर्शन मुझ में करो।**

हम सबका उन्होंने यूं अपने में समावेश किया है, इसलिए हम निहाल हो गये हैं। वैसे ही गुणातीत विभूति पप्पाजी ने **कंठी, माला व बैच प्रदर्शन के लिए नहीं, बल्कि इसलिए धारण की ताकि चार पंखुड़ी का सत्संग समाज एक होकर जीवन जीए।** सही मायने में पप्पाजी का स्मृति सौरभ उत्सव मनाया भी इसे कहा जाए।

काकाजी अकसर कहते थे—नेगेटिव-पोज़ीटिव सरकिट कम्पलीट होगा तभी लाईट जलेगी।

इसी प्रकार, **संप, सुहृदभाव, एकता व मिलजुल कर कार्य करने की भावना से ही सरकिट कम्पलीट होगा और प्रभु का प्रकाश प्राप्त होगा।**

जीवन में हमने बहुत प्रगति करी है। परंतु, योगीरूप, काकारूप, पप्पारूप बनने में हम बहुत दूर हैं। यह दूरी क्या कि हम मुक्तों को नापते करते रहते हैं।

प्रभु का संबंध देखकर हमें मुक्तों की सिर्फ महिमा व गुणगान गाना है। भगत कैसा भी हो, उसे देखकर हृदय में आनंद प्रगटना चाहिए। यह भाव संस्था, अपनी मान्यताएं, त्यागाश्रम की ग्रंथियों को पिघाल देगा। इन ग्रंथियों को पिघाल कर ब्रह्मस्वरूप-गुणातीतभाव को पाने का सरल मार्ग काकाजी, पप्पाजी, स्वामीजी व महंतस्वामीजी ने हमें बताया है।

निर्मळस्वामी के हृदय में अपरंपार महिमा है तभी हर समय गुणगान ही गाया करते हैं। काकाजी जिस सर्वदेशीयता की बात करते थे,



पप्पाजी ने जिस चार पंखुड़ी सत्संग को एकरूप करके भक्ति करी, इसका सच्चा दर्शन करना हो, तो दिल्ली में गुरुजी के अनिर्देश का दर्शन करो — वहाँ किसी भी सेन्टर से कोई भी भगत जाए... काकाजी-पप्पाजी को यह कराना था।

...गुणातीत ज्योत की बहनों द्वारा काकाजी-पप्पाजी का संकल्प काम कर रहा है। हंसा दीदी, देवी बेन की भेंट हमने पाई। वे खूब बड़े हैं, लेकिन तब भी हमें बड़प्पन देकर आगे रखते हैं। ऐसे अद्भुत समाज में पप्पाजी ने हमें रखा है। जो भी कसर होगी, वह वे निकाल देंगे। सो, **सबकी सेवा, महिमा और गुणगान गाये।** सच में काकाजी-पप्पाजी ने हमारे लिये खूब परिश्रम किया है, जिसका शब्दों में वर्णन नहीं किया जा सकता। हम पर निरंतर कृपा बरसाई, हमारा जतन किया व हमारे लिए जो परिश्रम किया, वो सच में अकल्पनीय है। बाह्यरूप से दिखाई नहीं देगा। पर, अपने संकल्प से उन्होंने हमें प्रभु की ओर गतिमान किया है। उनके संकल्प व आशीर्वाद से ऐसे मुक्तों-भक्तों का जोग प्राप्त हुआ है। परिणामस्वरूप आज सुख से भगवान भजने का हमें अद्भुत मौका मिला है। यह हम याद रखें। संप, सुहृदभाव व एकता से सभी कार्य करें। **जहाँ हो वहाँ हृदय में एक-दूसरे के प्रति भाव, रिस्पेक्ट, मान व महिमा रखते हुए करो।**

स्वामिनारायण भगवान ने कहा है कि —

मेरा होकर जो जियेगा, वह भले लाख गांव दूर हो फिर भी मेरे पास ही होगा। परंतु, जो मेरे समीप रहकर भी मेरा होकर नहीं जियेगा, तो वह मुझसे लाख गांव दूर है।

भगवान के होकर जीवन जियेंगे, तो सदैव उनके पास रहेंगे।

एक-दूसरे के लिए प्रेम, दिव्यभाव, निर्दोषभाव, एक-दूसरे का पूरक बन कर उनके कार्य को प्रोत्साहित करने की भावना रखना एक भक्ति है। **याद रखें कि हम ब्रह्मज्योति से गुणातीत ज्योत या सोखड़ा जायें और वहां प्रेमस्वामी-प्रबोधस्वामी के साथ मेलजोल रखें, वह एकता नहीं है। हम जहाँ हैं वहाँ एक-दूसरे के साथ मिलजुल कर रहें—यह ज़रूरी है।** एक बाप के चार बेटे भले बड़े महल खरीदें, पर आपस में दुश्मनी-अलगाव रखें, तो किस बाप के हृदय को शांति मिलेगी। परंतु चारों बेटे झोंपड़ी में रहते हुए भले मजदूरी करते हों, लेकिन साथ में खाते हों और आपस में प्रेम से रहते हों, तो बाप को अंतर से खूब सुकून मिलता है।

काकाजी-पप्पाजी को हमें अंतर से राज़ी करना है उन्हें अंतर से राज़ी करने का एक ही उपाय है—**जिन प्रगट स्वरूपों द्वारा वे कार्य व विचरण कर रहे हैं, ऐसे अद्भुत साधु गुरुजी, निर्मळस्वामी, प्रेमस्वामी, प्रबोधस्वामी, दिनकरभाई,**



भरतभाई, वशीभाई, शांतिभाई, अश्विनभाई, हंसा दीदी, देवी बेन, आनंदी दीदी, सर्वेश्वर दीदी—सब निर्दोष व दिव्य हैं। उनकी सेवा अहोहोभाव से आनंदपूर्वक करें। सेवा से प्रभु को राजी करने का श्रेष्ठ उपाय प्रभु ने ही बताया है।

शास्त्रीजी महाराज के देहत्याग के बाद योगीजी महाराज उत्तराधिकारी बने। तब ऐसी बातें होने लगीं कि अब सत्संग समाज का क्या होगा? बापा को व्यवहार की समझ नहीं है। एक प्रमुखस्वामी के सिवाय पूरी बी.ए.पी.एस. संस्था बापा के विरोध में थी। उस समय काकाजी-पप्पाजी ने बापा को प्रभु का स्वरूप माना और संपूर्ण समाज को एहसास करा दिया कि बापा के साथ आए वे गुणातीत स्वरूप हैं।

1952 में काकाजी को ज्ञानसमाधि हुई और अक्षरपुरुषोत्तम की शुद्ध उपासना का रहस्य काकाजी ने बताया कि अक्षरधाम में जो महाराज विराजमान हैं, वे ही हमें योगीजी महाराज के रूप में मिले हैं।

जिस समय बापा को सामान्य साधु मानने में भी लोगों को आपत्ति थी, उस समय पप्पाजी ने बापा को अपनी आत्मा माना और स्वयं को उनका प्रकाश। तब से पप्पाजी बापा का साकार स्वरूप बन गए और सभी को एहसास कराया।

हरिप्रसादस्वामीजी को तो बापा ने कहा था दादुभाई-बाबुभाई का समागम करना। योगीजी महाराज का प्राकट्य दिन पहली बार 1956 में मनाया गया। उस समय योगीजी महाराज के जीवन चरित्र की किताब प्रकाशित की। जिसे कोई चार आने में भी लेने को तैयार नहीं होता था! पर, इन दिव्य पुरुषों के परिश्रम से आज हम आनंदपूर्वक गुणातीतभाव को पाने की साधना कर रहे हैं।

सच में यह सब उनकी कृपा, आशीर्वाद, संकल्प का फल है। ऐसे दिव्य पुरुषों का ऋण हम क्या अदा करें? उनके समाज को दिव्य मानकर सम्यक् निर्दोषभाव से उसकी सेवा करें... सम्यक् निर्दोषभाव सब में रहे।

आज अक्षरधाम की सभा है। मिलजुल कर, एकत्व से भक्ति करने के लिये प्रभु बल, बुद्धि, प्रेरणा दें... इन दिव्य पुरुषों ने हमारे लिये जो किया है, उसका यत्किंचित् ऋण अदा करें, ऐसा हमारा जीवन बने, यही सर्व गुरुचरणों में सभी मुक्तों की ओर से प्रार्थना।

तत्पश्चात् स्मृति सौरभ आशीर्वाद देते हुए प.पू. दिनकर अंकल ने कहा —
...पूरी दुनिया जब क्रिसमस मना रही है, हम पप्पाजी का प्राकट्योत्सव मना रहे हैं...



1988 में पप्पाजी पहली बार अमेरिका पधारे थे। तब उन्होंने हमें सत्संग का खूब लाभ दिया।

1973 में काकाजी, साहेबजी व हर्षदभाई भट्ट के साथ अमेरिका पधारे थे, तब से वहाँ सत्संग की शुरुआत हुई।

1985 में स्वामीजी पधारे और वर्षों तक विचरण किया।

पप्पाजी नौ बार अमेरिका आये। सन 2000 में 84 वर्ष की उम्र में वे अंतिम बार अमेरिका पधारे थे। इतनी उम्र होने पर भी वे खूब जोशीले थे, तो हम भी उस मार्ग पर चलें। हंसा दीदी और बहनों ने खूब परिश्रम किया है। साहेब ने कहा वैसे अंतर से हम सबको अपना मानें। अंतर की हमारी एकता होगी, तभी एकांतिकभाव संभव होगा। काकाजी कहते थे— भगतजी महाराज, जागास्वामी और कृष्णजी अदा गुणातीतानंदस्वामी के स्वरूप थे। परंतु, उनके चेले एकजूट नहीं हुए और भेद उत्पन्न किया। यदि हम भी इसी प्रकार खींचातानी में लगे रहेंगे, तो यही बात रिपीट होगी। हमें यह नहीं करना। जैसे साहेब ने कहा कि हमें अपने दिल की सच्चाई से संकल्प करना है कि ऐसी खींचातानी में नहीं पड़ना।

गुरुहरि पप्पाजी के साथ की दिव्य स्मृति करते हुए प.पू. गुरुजी ने आशिष दी—

अपनी बात शुरू करने से पहले आप सभी से एक सवाल पूछना है।

क्या आप सभी ने साहेब की बात सुनी? क्या मैं दिखाई दे रहा हूँ? यदि मैं दिख रहा हूँ, तो आपने साहेब की बात सुनी ही नहीं। अगर साहेब की बात सुनी होती, तो भीतर में ऐसी एकता होती कि मेरे बदले आपको खुद दिखाई देने चाहिये।

आज के दिन साहेब ऐसे आशीर्वाद दें कि हमारी सारी ग्रंथियाँ स्वरूप में लयलीन होकर पिघल जायें। जहाँ कोई भेददृष्टि ही न हो। हम दिल्ली के, ये मुंबई के, ये विद्यानगर के, ये हरिधाम के, ये समढियाला के, ये कंथारिया के, ऐसा कुछ रहे ही नहीं। हम काकाजी-पप्पाजी के सब एक।

यह ज्ञान सिर्फ बोलने में न रहे। जब तक हमें सामने वाला व्यक्ति नज़र आता है, तब तक हम यह ज़रूर मानें कि अभी तक इस ज्ञान को हम भीतर में अपना नहीं पाये।

जब सामने वाले व्यक्ति में हम खुद को देखेंगे, तो उसमें दोष कहाँ नज़र आयेगा? क्या हम कभी अपना दोष देखते हैं? अपना दोष देख कर उसे ढकने, पिघलाने के लिये गद्गद् कंठ से रोते हुए महाराज के पास हाथ जोड़ कर, उससे परे होने के लिये प्रार्थना करें तब एहसास होगा कि सच में मुझमें ऐसा सब था! तब



मानना कि हमने स्वरूप का सच में सेवन किया।

पप्पाजी का आज का दिन इसी हेतु है। डेकोरेशन करना, स्टेज बनाना, बड़ी संख्या में लोगों को भोजन व आनंद कराना, इन सब के लिए पप्पाजी का 'स्मृति पर्व' नहीं है। यह सब तो जगत में भी होता है। लेकिन, हमारे बौद्धिक मूल्यांकन पिघल जाएँ और जीवन में केवल एक मात्र स्वरूप ही रहें, इसे सही मायने में पप्पाजी का 'स्मृति पर्व' मनाया कहा जाए। साहेब ने बात की कि पप्पाजी ने जब यह एहसास किया कि मैं तो जोगी का प्रकाश, तब से उनके जीवन में अपने पुत्रों—रमेश व प्रफुल्ल की कोई एहमियत नहीं रही।

क्या हमें किसी दिन ऐसा विचार आया है?

यूँ यदि हम स्वयं को पप्पाजी का प्रकाश मानते हैं, तो फिर सामने वाला व्यक्ति कहाँ नज़र आयेगा?

यह सब छोड़ कर पप्पाजी के सम्यक् स्वरूप को पहचानने का प्रयत्न करें। इसे पप्पाजी का सच्चा 'स्मृति पर्व' मनाया कहा जाए।

यह सारा पिष्टपेषण पूरा करने के बाद मुझे विचार आता है कि यदि काकाजी, पप्पाजी, स्वामीजी जैसे गुणातीत पुरुष हमें न मिले होते, तो हम भी जगत के जीवों की तरह भेड़चाल का जीवन जी रहे होते। इसलिए पप्पाजी-काकाजी की शताब्दी के समय उनका वर्णन करते हुए राकेशभाई ने एक भजन में लिखा है—

अपनाया नहीं होता जो आपने तो, होता हमारा क्या हाल।

इसी संदर्भ में मुझे याद आता है कि एक बार यहीं रामकृष्ण मिशन हॉल में शिविर चल रही थी। वहाँ जड़भरत और मृग का चित्र दिखा कर पप्पाजी ने मृग पर उंगली रखते हुए मुझसे कहा—

यह मुकुंद काकाजी का मृग है।

मुझे उस समय यह बात समझ नहीं आई। पर, मन में विचार उठा कि काकाजी के लिए पप्पाजी ने ऐसा क्यों कहा? काकाजी को मेरे प्रति ऐसी आसक्ति कहाँ है, जिसके कारण भरतजी को मृग का अवतार लेना पड़ा। काकाजी के लिये तो ऐसा हो ही नहीं सकता और पप्पाजी ऐसा क्यों बोले? पर, धीरे-धीरे मुझे यह समझ आया कि पप्पाजी के कहने का मर्म यह था कि— काकाजी ने बियाँड लिमिट जाकर मुकुंद का जतन किया है, जिसका वर्णन शब्दों में नहीं किया जा सकता।

पप्पाजी के लिए काकाजी एक बात कहते थे— मेरा भाई बहुत प्रमाणिक!



पप्पाजी की प्रमाणिकता की पुष्टि करता एक प्रसंग याद आता है—

काकाजी एक बार फॉरेन गए थे। मुझे पप्पाजी के प्रति आदर जरूर था, लेकिन उनसे लगाव नहीं था। तो, मैं पहले बा के पास जाता था और फिर पप्पाजी के पैर छूने के लिये जाता था। एक बार मैं ताड़देव में दाखिल हो रहा था कि पप्पाजी तारा बहन को सूचना दे रहे थे कि यह जो दिलीप है, उसे मेरे साथ ज्यादा जमता नहीं है। पर यह अपना है, सो इसका ख्याल रखना-संभालना। पप्पाजी की यह बात सुनकर मुझे भीतर में एहसास हुआ कि **मैं जिन्हें अपना नहीं गिनता, वे तो मुझे अपना मानते हैं। इसलिए जो कुछ भी कसर है, वो मेरी ही है।**

हम अभी इंडीमेसी-आत्मीयता की बातें करते हैं, लेकिन पप्पाजी को उस समय से हम सभी के प्रति आत्मीयता थी। काकाजी के स्वधाम जाने के बाद पप्पाजी, स्वामीजी, साहेब और सारे गुणातीत समाज ने हमें आत्मीयता की जो हूँफ दी है, प्रसंग पर हमारे साथ खड़े रहे और जहाँ जरूरत लगी वहाँ इन गुणातीत स्वरूपों ने आत्मीयता से हमें डाँट कर भी ग़लती करने से रोका है, उनका ऋण कभी भूलें नहीं।

अंतर में एक दृढ़ता कर लें कि आज भी ऐसे मुक्तों द्वारा काकाजी, पप्पाजी, स्वामीजी प्रगट हैं... प्रगट के भाव से मुक्तों में काकाजी-पप्पाजी को देखते रहेंगे, तो **भगवान के भक्त में आत्मबुद्धि और प्रीति वही सत्संग है—** यह सही अर्थ में माना जाएगा।

हम सब इस राह पर चलने का प्रयत्न भी करते हैं। पर, **हमारी आत्मबुद्धि व प्रीति शर्ती है और जब तक आत्मबुद्धि व प्रीति शर्ती रहेगी, तब तक वह मर्यादित रहेगी, अपने गुप तक सीमित रहेगी। और... अलग-अलग गुप का दर्शन कराएगी।**

हमें इससे परे जाना है। केवल चेतना का संबंध देखना है। जिसे श्री अरविंद ने चैतसिक कहा। यह शब्द मैं इसलिये इस्तेमाल कर रहा हूँ कि कई पुराने मुक्तों को याद होगा कि पप्पाजी शुरुआत में अरविंद को फॉलो करते थे। वो ये शब्द का प्रयोग करते थे।

जब तक चेतना हमारे स्वरूप के अनुरूप नहीं बनेगी, तब तक हम अपने गुप में निमग्न रहेंगे।

सो, सर्वदेशीय व व्यापक बनाने के लिए हम ऊपर उठें। **हर एक के अंदर काकाजी और पप्पाजी दोनों को अलग-अलग नहीं, बल्कि एक गुणातीत विभूतियों के प्रतीक के रूप में हम दोनों को देखें, तनिक भी कम-ज्यादा का भाव इनके प्रति न रहे।**

काकाजी का दर्शन करें तो मन में यह भाव रहे कि अहोहो, पप्पाजी के दर्शन हुए। पप्पाजी का दर्शन करें, तो लगे काकाजी के दर्शन हुए। मुझे सच में हमेशा यही



भाव रहा है। इसी भाव से योगी परिवार के हम सब एक!

आज हमारा पूरा समाज हमसे यह आशा रखता है। ऐसी सर्वदेशियता से व्यापक रूप से सब में प्रभु का-अपने प्रगट प्रभु का दर्शन करें... हम अक्षरधाम में तो रहते हैं, पर आते-जाते रहते हैं। सुबह मूर्ति में लयलीन होकर भजन करते हैं, लेकिन वह पूरा होने के बाद व्यक्ति दिखाई देने लगते हैं। उसकी बजाय रात को सोने जायें तब तक, जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति में केवल-केवल मूर्ति में निमग्न रहें—ऐसी कक्षा पर हम जल्द से जल्द पहुँच जायें ऐसी प्रार्थना।

गुणातीत समाज के आद्य सर्जक गुरुहरि काकाजी, गुरुहरि पप्पाजी एवं गुरुहरि हरिप्रसादस्वामीजी ने अपनी स्थूल देह त्याग करने से पूर्व उत्सवों में जो आशीर्दान दिया, उसका दर्शन कराती विडियो से सभी कृतार्थ हो गए।

अंत में पंडाल में बैठे सभी ने हम एक हैं कि भावना व्यक्त करते हुए एक-दूजे का हाथ पकड़ा और तब स्वरवृंद ने **‘चालो भक्तो एक संगाये हाथमां हाथ झाली लई, अक्षरधाम खुली गया छे...’** भजन प्रस्तुत किया। इसी दौरान एक-दूजे से जुड़े हारों को मंचस्थ स्वरूपों-संतों को एक साथ पहनाया गया। ये दोनों दृश्य अत्यंत आत्मस्पर्शी थे। इसी के साथ संतों-युवकों की सभा का समापन हुआ।

गुरुहरि योगीबापा के वचन से बहनों को भगवान भजवाने का मार्ग प्रशस्त कराने के लिये, गुरुहरि काकाजी एवं गुरुहरि पप्पाजी ने तत्काल रुढ़िगत समाज का विरोध कल्पना से परे का सहा। सो, दिव्य विभूति **गुरुहरि पप्पाजी** के **105वें प्राकट्य पर्व** पर भक्ति अदा करने हेतु **26 दिसंबर** की सुबह बहनों के सान्निध्य में सभा का आयोजन था। गुरुहरि पप्पाजी की जीवनभावना — ‘प्रथम प्रभु पछी पगलुं’ को दर्शाते हुए पुष्पों से ‘P’ अंकित वाहनों में विराजमान बहनों ने सभा मंडप में प्रवेश किया। तत्पश्चात् स्वागत नृत्य करते हुए **‘ब्रह्मसमाजना घडवैया’** लिखित पालकी में विराजमान गुरुहरि पप्पाजी की मूर्ति को मंच पर स्थापित किया गया। सभा के प्रारंभ में **‘आप्यो रे रुडो जोग...’** गरबा प्रस्तुत करके बहनों ने भक्ति अदा की। तत्पश्चात् मंडप में उपस्थित मुक्तों ने यथास्थान पर खड़े होकर, दो हाथ जोड़ कर **‘गुरुहरि पप्पाजी आप प्रगट छो, स्वरूपोना सान्निध्यमां प्रत्यक्ष छो...’** स्तुति वंदना की। सभा का प्रारंभ एक प्रश्नोत्तरी के रूप में गुरुहरि पप्पाजी के आशीर्वाद से हुआ। मंचस्थ स्वरूप बहनों को उत्सव का बँच व हार अर्पण होने के बाद सर्वप्रथम गुणातीत ज्योत की वरिष्ठ **पू. हंसा** **बहन गुणातीत** ने गुणातीत समाज के सभी केन्द्रों में भगवान भजती बहनों का गुणगान करते हुए ‘स्मृति सौरभ प्रार्थना’ की—



...पप्पाजी के दर्शन मात्र से अंतर में दृढ़ता हो गई कि ये ही मेरे कल्याण व मोक्ष के दाता हैं और मुझे जीवन का समर्पण करना नहीं पड़ा, स्वाभाविक रीति से हो गया... उन्हें सिर्फ हमारी आत्मा दिखाई देती है और काकाजी, पप्पाजी और बा के संकल्प से, उनके लहू की बूंद के बलिदान से ब्रह्मसमाज स्थापित हुआ है... ज्योत में सभी बहनों को पप्पाजी ने उनकी रीति से सेवा देकर **‘परम भागवत संत’** बनाया। नारी को नारायणी बनाने का कार्य काकाजी-पप्पाजी ने इस प्रकार सुगम-सुलभ कर दिया... पप्पाजी द्वारा दिया एक वाक्य ब्रह्मसूत्र बन जाता है। भविष्य में लोग उस पर रीसर्च करेंगे, तो भी वे समझ नहीं पायेंगे। ऐसे पप्पाजी हमें सहज मौज व मुफ्त में मिल गये, आत्मा में विराजमान हो गये। भगवान के रूप में स्वीकार हो गये और अपने अनुरूप उन्होंने हमारा तंत्र बना दिया। उन्होंने पृथ्वी पर जो सर्जन किया, उसका यहाँ विराजमान स्वरूपों द्वारा दर्शन हो रहा है... ऐसा जोग कहाँ मिलने वाला है? बस यह मौका लूट लें और सही अर्थ में **‘सच्चा साधु’** बनें। किसी भी भूमिका में अटकें नहीं। हे पप्पाजी, केवल एक आपका होकर रहें...

सभी केन्द्रों की प्रतिनिधि बहनों द्वारा गुरुहरि पप्पाजी को हार अर्पण करने के उपरांत **पू. डॉ. नीलम बहन** ने अनुभव दर्शन कराया —

...श्रीजी महाराज का संकल्प आत्मसात् करने के लिये हमारा कलेवर मन, बुद्धि, चित्त अहंकार के रहित होना चाहिये। **अनादि अक्षरब्रह्म गुणातीत प्रगटे, तो उनके वारिसदारों ने हमारा हाथ थामा। काकाजी, पप्पाजी, सोनाबा संरक्षक बने...** हमें ब्रह्मरूप करने की जिम्मेदारी ली। बहनों को व्रत देकर, उनके लिये काकाजी-पप्पाजी ने नियम बनाये... अपने संकल्प और प्रेम से उन्होंने हमें बांधा। फलस्वरूप भीतर में अनुशासन प्रकटा कि पप्पाजी को जो नहीं पसंद है, वो मैं नहीं करूँगी। मेरे गुरु को जो पसंद नहीं है, वो मैं नहीं करूँगी...

गुरुजी ने बहुत अच्छी बात की कि मैं तुम्हें दिखाई देता हूँ? उनका कहना था कि सामने वाले में भी खुद को देखना चाहिये। यूँ सब में पप्पाजी ही दिखाई देने चाहिये... पप्पाजी कहते थे ज्ञान नहीं, नीरवता होनी चाहिये। पप्पाजी जैसे पुरुष का स्मरण और उनके कार्य की शक्ति का दर्शन करते हैं, तो ब्रह्मानंद की मस्ती आती है... हम सभी के हृदय में हमारे सत्पुरुष ने संकल्प करके स्थान लिया ही है। उनका संकल्प एक ही है कि तुम गुणातीत साधु बनो... इतने वर्षों तक

पप्पाजी ने अपने सान्निध्य से कई स्थानों और जीवों को तीर्थत्व प्रदान किया है। उसकी विस्मृति न हो, स्मृति रहे और आनंद की सौरभ बनने योग्य मेरा तंत्र बने...

भूलें नहीं कि मैं आपका प्रकाश हूँ। इन पुरुषों ने बहुत कुछ दिया है। उनकी



निर्मल, निर्दोष नज़र और उनके स्मित का ध्यान करें, तो अंतर प्रफुल्लित हो जाता है। उसी सुख से हम संकल्प, भाव और क्रिया करें...

तत्पश्चात् **प.पू. सर्वेश्वर बहन** ने प्रार्थना करते हुए कहा—

आज अद्भुत लाभ प्राप्त करने हम सब एकत्र हुए हैं। आज के मंगल पर्व पर प्रार्थना करने का मौका मिला है, तब स्मृतियाँ हो रही हैं।

पहली— पप्पाजी ने स्वामीजी की 63वीं जन्मजयंती लंडन में मनाई थी। उस दिन **पप्पाजी** ने स्वामीजी का जीवन दर्शन कराते हुए कहा—

हरिप्रसादस्वामीजी कल्याण यात्रा के लिए लंडन की धरती पर पधारे हैं। भगवान स्वामिनारायण जिस गुणातीत परंपरा को धरती पर ले आए, हम सब उसी कल्याण परंपरा में बैठे हैं... भारत में लाखों भक्तों व कार्य को छोड़ कर स्वामीजी यहाँ विराजमान हैं।

पप्पाजी का वचन पूरा होने से पहले **स्वामीजी** बोल उठे—

पप्पाजी, यहाँ कोई कार्य कैसे याद आएगा? जब सत्पुरुष के समक्ष बैठने का सौभाग्य प्राप्त हो, तब सम्पूर्ण भार सत्पुरुष को सौंप देना होता है। उनके समक्ष तो केवल हाथ जोड़कर बैठना होता है।

दूसरी स्मृति— पप्पाजी का 82वां प्रागट्य पर्व मनाया जा रहा था, तब **स्वामीजी** ने हम सब साधकों को सूचन करते हुए कहा था—

आज सबसे विशेष बात यह है कि हम सब जीवंत परंपरा में बैठे हैं। पप्पाजी की 82 वर्ष की उम्र और उनके स्वस्थ व निरामय देह का दर्शन हम सभी साधकों के लिए सौभाग्य की बात है। यह दर्शन साधकों के लिए परम कृपा है।

गुणातीत परंपरा को समझाते हुए **स्वामीजी** हमेशा कहते थे— भगवान स्वामिनारायण ने भारत की धरती पर जीवंत प्रणालिका को स्थापित करके हम सबको सनाथ किया है। खूब अहोभाव से भगवान के साथ रहते हुए भगवान भजते हैं। पृथ्वी पर कलियुग में इससे बढ़ कर कोई नसीब हो ही नहीं सकता। ऐसे सत्पुरुष की नज़र में हम आ गये।

भगवान स्वामिनारायण ने बोले श्रीहरि रे में स्वयं यह लिखा—मेरा लोक, भोग व मुक्त सब दिव्य हैं।

इन पंक्तियाँ को समझाते हुए **स्वामीजी** बोले— जो मेरे साथ जुड़े हुए हैं, उनका सब कुछ दिव्य है।

मन, बुद्धि, चित्त और अहम् के पार जाकर हमें यह बात स्थिर करनी है। यह



मानना सरल नहीं है। परंतु, मुक्तों की महिमा का गान व हमें मिले प्रगट प्रभु के अथक् परिश्रम की ओर निरंतर नज़र रखनी है। मुझे अक्षरधाम का अधिकारी बनाने के लिए उन्होंने यह मनुष्य देह धारण किया है...

महाराज ने हमारे लिये जब जीवंत परंपरा स्थापित की, तब एक ही संकल्प करें- आशीर्वाद मांगें कि हमें जो मिले हैं, हम उन्हें समझें, उनकी शोभा बढ़ायें और स्वयं को सेवा-भक्ति में याहोम कर दें। काकाजी 66 से 68 के दौरान जब सोखड़ा आते, तब कहते थे- बालक बनना है, भगवान का ही बल लेकर जीना है। स्वामीजी कहते कि ये सूत्र बहुत अनिवार्य है। भगवान हमारा सब कुछ कर देंगे। आज के दिन स्वरूपों के चरणों में प्रार्थना है कि आप जो भी संकल्प करें या आशीर्वाद दें, वो हम आत्मसात् करने तत्पर बनें... हमारी जाग्रतता प्रतिदिन बढ़ती रहे।

गुरुहरि पप्पाजी की कृपापात्र लंदन की **पू. अरुणा बहन भोजाणी** ने विडियो द्वारा स्मृति लाभ दिया —

...पप्पाजी के मिलने से हम खूब धन्य और नसीबदार बन गये... विदेश की धरती पर पप्पाजी ने बहनों को भेजा। इनके समागम से सेवा और स्वभजन करने की तालीम मिली... धीरे-धीरे पप्पाजी के स्वरूप की पहचान होने लगी। हम जगत के मूल्यांकन से जीते थे, लेकिन सत्संग करते हुए ख्याल पड़ा कि यहाँ मूल्यांकन ही अलग हैं। किसी का दोष, स्वभाव, प्रकृति, त्रुटि देखना नहीं, संबंध वाले की सेवा करनी और उसमें प्रभु को देखना है... **सद्गुरुओं ने महिमा गाई, तो ख्याल आया कि पप्पाजी भगवान का स्वरूप हैं, पप्पाजी का जीवन और वर्तन देखा तो अनुभव किया कि गुणातीत स्वरूप ऐसे होते हैं।**

तदोपरान्त प्रथम सभा की भाँति ही मंचस्थ स्वरूप बहनों के समक्ष केक का प्रसाद अर्पण किया गया। जिनकी मोमबत्तियों पर अंग्रेजी में **PAPPAJI 105** लिखा था। केक के प्रसाद के बाद **प.पू. आनंदी दीदी** ने आशीष याचना करते हुए कहा —

...आज करीब डेढ़-दो साल के बाद, मानो पप्पाजी ने ही हम सबको एक साथ इकट्ठे कर दिये हैं। आज **पप्पाजी** का **105वां** प्रागट्य दिन मना रहे हैं, तो सभी स्वरूपों के चरणों में एक प्रार्थना करनी है कि अभी जो ओमिक्रोन-कोरोना का बोल रहे हैं, उसमें अपने सभी हरिभक्तों

की खूब रक्षा हो और दिल्ली में **गुरुजी** का **85वां बर्थडे 'साधु-पर्व'** हम सब इकट्ठे होकर मना सकें। हमारी अक्षर और पुरुषोत्तम की युगल उपासना है। गुरुजी अकसर बात करते हैं कि महाराज ने स्वयं कहा कि गुणातीतानंदस्वामी को नहीं



लाए होते तो वे अधूरे रहते और गुणातीतानंदस्वामी ने तो ऐसा कहा कि श्रीजी महाराज के बिना मेरा कोई अस्तित्व ही नहीं है। मुझे हमेशा ऐसा रहता है कि काकाजी और पप्पाजी एक दूसरे में समाए हुए हैं। जैसे सबने बताया कि एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। सालों पहले काकाजी अकसर अपनी बातों में कहते—

‘अमारी एकता ने तमे नहीं समझी शको, अमारा तो मझियारा हैया’।

उस समय तो ये बात समझ नहीं आती थी। दोनों की जीवनशैली खूब अलग दिखाई पड़ती थी। पर, धीरे-धीरे ख्याल पड़ा कि उनकी आंतरिक एकता खूब जबरदस्त थी। मैंने एक प्रसंग सुना था—

काकाजी ताड़देव में जलेबी खा रहे थे और तभी पप्पाजी से जुड़े एक मुक्त आए।

काकाजी बोले— ‘पप्पाजी पण जलेबी जमे छे, तमे पूछी जुओ...’

पता लगाया तो सच में पप्पाजी भी उस समय विद्यानगर में फाफड़ा-जलेबी का नाश्ता कर रहे थे।

बापा तो इन दोनों भाइयों को अपना कार्य कराने के लिए ही धरती पर लाये थे। संतों-युवकों, गृहस्थ मुक्तों का समाज तैयार किया। लेकिन, ये बहनों को एकांतिक धर्म सिद्ध कराने का कार्य अशक्य था। काकाजी के प्रवचन में ही कल था कि बापा ने कहा था— एमा टाल पड़ी जशे।

लेकिन, ऐसे अशक्य कार्य को शक्य करके उन्होंने दिखाया। आज काकाजी, पप्पाजी, स्वामीजी और अक्षरविहारीस्वामीजी स्थूल रूप से अपने बीच नहीं हैं। पर, हरेक का दिल कहेगा कि वे संतभगवंत साहेबजी, गुरुजी, दिनकरभाई, भरतभाई-वशीभाई और इन बड़ी बहनों के रूप में हमारे बीच प्रगट ही हैं।

ज्योति बहन, तारा बहन, दीदी, देवी बहन, प्रेम दीदी, योगिनी बहन, सर्वेश्वर दीदी अगर नींव में न समाए होते, तो आज हम सबका इस रास्ते चलना एक कल्पना ही होती। खूब कृपा करके इन सबने हम सबको इस रास्ते अग्रसर कर दिया। जगत की हाय-तौबा की सब बातें जब सुनते हैं, तब ख्याल आता है कि ओहो इन लोगों ने सच में हम पर कैसी कृपा करी है। महाराज के समय का एक प्रसंग हम सबको पता है—

‘महाराज ने संतों से पूछा कि तुम्हें संकल्प परेशान करते हैं? जिन्हें इस चीज़ का ख्याल ही नहीं था, उन्होंने कहा—नहीं, महाराज जब से आप मिले हैं, तब से कोई संकल्प उठता ही नहीं है। लेकिन सबसे बड़े मुक्तानंदस्वामी ने कहा—महाराज विचारों का तो ऐसा है कि एक थैली में सरसों के दाने



भरे हों और नीचे एक छोटा-सा छेद कर दिया हो, तो सारे दाने अपने आप फिसलते हुए निकल जाते हैं।'

गुरुजी तो कहते हैं कि जड़ वस्तु या ये गुणातीत स्वरूप को संकल्प नहीं उठेंगे, बाकी हमें तो उठेंगे ही। मेरी स्टडी टेबल एक बहुत पुराना कलेण्डर है। उस पर पप्पाजी की बहुत अच्छी मूर्तियाँ और उनके सूत्र भी लिखे हुए हैं। सुबह टेबल पर जब बैठती हूँ, तो काम करने से पहले कलेण्डर की डेट चेइन्ज करती हूँ। एक दिन मेरा माइंड थॉट्स से परेशान हो रहा था, रोज़ की तरह मैंने कलेण्डर का पन्ना पल्टा। शायद 16 तारीख का पन्ना था और उस पर लिखा था—

‘दरेक प्रसंगे श्रीजी ने उपायभूत करवा, एज छे सर्वोपरिनो आसरो।’

वह पढ़ कर मेरा माइंड एकदम शांत हो गया कि स्वरूपों ने हमें कितनी चाबियाँ दी हैं। प्रसंगों पर पप्पाजी का कहा हुआ सिर्फ एक सेन्टेन्स याद करें कि

‘आइ एम पेइंग धी कॉस्ट ऑफ माय कल्याण।’

एक दिन सूत्र आया—

‘गुणातीतना अल्प संबंधवाळाने निर्दोष मानीने वर्तीए, तो निर्दोष थई जवाया।’

जब प्रसंग बनते हैं, तब कोई ज्ञान याद नहीं आता, साधु का लाड़-प्यार याद नहीं आता, प्रसादी की दी हुई इतनी चीजें काम नहीं आतीं। लेकिन ऐसे छोटे-छोटे सूत्र काम कर जाते हैं। जैसे काकाजी कहते थे—

मानसिक गणत्रियों मुकी देशो, तो चैतन्य भूमिका ऑटोमेटिक शरु थई जशो।

स्वरूपों ने हमें भरपूर दिया है और कोरोना काल में तो बहुत ज़्यादा। अब सिर्फ हमारे वर्तने की कसर रह गई है। ऐसा मुझे मेरे लिये लगता है। शुरुआत में हमने स्वामीजी, संतभगवंत साहेबजी और इन बहनों के दर्शन नहीं किए थे, लेकिन काकाजी जब भी दिल्ली आते तो हमेशा इनकी बहुत महिमा गाते। ऐसे ही पप्पाजी ने भी हमारे भीतर खूब महिमा भरी है। मुझे याद आता है—1996 में यहाँ भक्ति उत्सव में दिल्ली से हम 100-125 जने आए थे। राकेशभाई जो हमारे यहाँ हिन्दी भजन बनाते हैं, उन्होंने तब पप्पाजी के लिये एक भजन बनाया था—

‘भक्ति उत्सव आज मनाएं, शाश्वत् ये पल कर लें।’

गुरुजी ने भजन में स्वयं एक-एक शब्द का चेइन्ज कराया। और तो और, कई बार खुद गाकर बताया कि ऐसे नहीं ऐसे गाओ। उस भजन में ही था—

‘अखंड धरा पर प्रगट रहूँगा, भारत पर आशीष बरसाए श्याम।

धन्यवाद, धन्यवाद, धन्यवाद...’



उसमें गुरुजी ने ऐसा लिखवाया—

पप्पाजी के रूप बिराजे, पहचानो हैं श्रीजी यहां, श्रीजी यहां, श्रीजी यहां...

एक लाइन ऐसी लिखवाई—

अमर गुणातीतभाव बहनों में प्रगटाया वो श्रीजी यहां, श्रीजी यहां, श्रीजी यहां....'

भक्ति उत्सव में जब वह गाया, तो सबको खूब पसंद आया।

फंक्शन की पूर्णाहुति के बाद हमें अमदावाद जाने के लिए निकलना था। हम सब प्रभुकृपा में पप्पाजी के दर्शन करने गये। अभी जहाँ पप्पाजी की मूर्ति रखी है वहाँ पहले डाइनिंग टेबल रखा रहता था। वहीं कोने में सोफे पर पप्पाजी बैठे थे। हम सब दर्शन करके पप्पाजी के आस-पास बैठ गए। तब इस भजन की बात निकली, तो पप्पाजी ने राकेशभाई को वह दोबारा गाने के लिये कहा। जैसे ही यह लाइन आई—

श्रीजी कहाँ? तो **पप्पाजी** ने रोक कर पूछा—

तमारा माटे श्रीजी क्यां?

हम सब तो पप्पाजी की तरफ निहार ही रहे थे। पर, पप्पाजी ने तुरंत कहा—

तमारा माटे श्रीजी गुरुजीमां छे।

ऐसा वे तीन बार बोले। दोबारा फिर पूछा कि तमारा माटे श्रीजी क्यां?

वो जगह, पप्पाजी के जेस्चर की सारी स्मृति अभी भी मुझे एकदम याद है। मैं रोज़ पूजा में याद करती हूँ। आज प्रार्थना करने का दिन है। ये सब स्वरूप हमें देने ही बैठे हैं। जैसे कल गुरुजी बोले न कि अब 85 तो हुए, कब पहुँचेंगे? काकाजी कहते—समागम से! हम समागम का अर्थ यही समझते थे कि संत के पास बैठ कर कथा-वार्ता सुनना। लेकिन काकाजी ने एक बार बताया था कि समा नी गम पड़ी जाए (समय की नज़ाकत समझें)—यह है समागम! अब समय ज़रा भी वेस्ट करने जैसा नहीं है। भजन की एक लाइन है—

‘तारी एक-एक पळ जाए लाखनी...’

आज स्वरूपों के चरणों में यही प्रार्थना करनी है कि अब निर्दोषबुद्धि और सुहृदभाव की लिफ्ट में आप हमें बिठा दो। अभी अक्टूबर में दिल्ली में तीन युवकों को साधु की दीक्षा दी थी। संतभगवंत साहेबजी तब पधारें थे। भागवती दीक्षा लेने के बाद तीनों संत साहेबजी के सामने बैठे थे। तब साहेबजी ने उन्हें आशीर्वाद देते हुए कहा—

हमसे चाहे कुछ और हो पाए या न हो पाए, पर कभी भी गुरुजी को किसी चीज़ के लिए ‘ना’ नहीं करना। हमेशा ‘हाँ जी’ करना, फिर



दोबारा उन्होंने पूछा भी— क्या करना?

फिर खुद बोले— ‘हाँ जी’ करना।

तत्पश्चात् प.पू. देवी बहन ने आशीर्दान दिया—

...हमें अंदर से संप, सुहृदभाव और एकता से जीना है... अंदर के माहात्म्य से हम यहाँ सब एकत्र हुए हैं।

ये अक्षरधाम की सभा है कि जहाँ मेरा-तेरा, पक्षपात कुछ भी नहीं। बस, आनंद-आनंद-आनंद... महिमा व माहात्म्य से बहनें उठाव लेती हैं। पप्पाजी-काकाजी को यही चाहिये था... **हमारे स्वरूपों को जो पसंद है, उस रुचि में हम जुड़ जायें और संप, सुहृदभाव, एकता रख कर ब्रह्मानंद करते रहें...** उनके सिद्धांत से किसी के अभाव-अवगुण में हमें पड़ना नहीं और स्वामी-स्वामी करना है...

प.पू. हंसा दीदी ने आशीष वर्षा करते हुए कहा—

...अभी भजन गाया— श्रीजी यहां, श्रीजी यहां... जब सभी श्रीजी हैं, तो उपदेश किसे देना है? सिर्फ दर्शन करना होता है। महाराज और शास्त्रीजी महाराज ने अनंत रीति से दर्शन दिये हैं। काकाजी ने अपने बिज़नेस के लिए 51 हजार रुपये एकत्र किये थे। परंतु, शास्त्रीजी महाराज ने गढडा मंदिर के निर्माण के लिए वे मांग लिये। काकाजी की सेवा से प्रसन्न होकर, योगीजी महाराज ने सन् 1952 में उन्हें साक्षात्कार करा के अपने स्वरूप की पहचान करा कर, प्रसन्नता का पुरस्कार दिया। हमें तो वह पुरस्कार बिल्कुल मुफ्त मिला है। उस समय की परिस्थिति अफ्रीका-मोम्बासा में पप्पाजी महाराज ने सुनी। पप्पाजी भारत पधारे। दोनों भाइयों ने बापा के संकल्प से गुणातीत समाज की रचना की।

काकाजी, पप्पाजी, स्वामीजी, अक्षरविहारीस्वामीजी, साहेबजी, गुरुजी, बा, बेन सब स्वतंत्र रूप से अपना कार्य कर सकें, इस हेतु बापा ने विभाजन कर दिया। फलस्वरूप आज हम यह सब कर पाए हैं। देवी बहन ने अपने आशीर्वचन में कहा कि भगवान के भक्त को माथे का मुकुट मानें। यह सुन कर मुझे विचार आया कि सिर पर जब मुकुट पहनते हैं, तो भार महसूस होता है। सो, जब सभी भक्त मेरे माथे के मुकुट होंगे, तो मुझे उनका कितना भार महसूस होगा? बस उस भार के कारण हम प्रभु को न भूल जायें, देवी बहन आप ऐसी कृपा करना...

जब योगीजी महाराज अंतर्धान हुए, तब ‘अनुपम’ में काकाजी, पप्पाजी, स्वामीजी,



अक्षरविहारीस्वामीजी, साहेबजी, हरिभाई साहेब एकत्र हुए और सब ने तय किया कि हम सभी को एक-दूसरे का स्वीकारना है। इसलिये ज्योत, पवई, हरिधाम, सांकरदा, अनुपम मिशन—सबको एक होकर करना है। सबको एक-दूजे को मान्य करना है...

अब साहेबजी के हाथ में सारे समाज की डोर है... अपने आश्रितों की वो उपास्य मूर्ति हैं, तो हमारे पूजनीय हैं। सो, उनके लिये सतत प्रार्थना करनी हैं। गुरुजी के लिये प्रार्थना करनी है। हम सब प्रार्थना करें कि साहेबजी व गुरुजी स्वस्थ रहें। ये दोनों स्वस्थ रहेंगे, तो अपने संकल्प से वे हमें बल प्रदान करेंगे।

इस उत्सव के लिए जब सारी योजना कर रहे थे, तब मैंने यही कहा—आनंद करते हुए भी हमें यह भूलना नहीं चाहिये कि हमारा कर्तव्य क्या है? चौबीस घंटे हमें मनन होना चाहिए कि हमें एकांतिक बनाने के लिये काकाजी-पप्पाजी, बा-बेन या जिस भी स्वरूप ने ग्रहण किया, उनका परिश्रम सार्थक करना है। इस देह का कोई भरोसा नहीं है। जब तब देह अच्छा है, सिंसियर रहना है। ओनली वन थिंग रिक्वायर्ड- सिंसियारीटी।

हमें अपने भगवान व गुरु के प्रति वफ़ादार रहना है। वह वफ़ादारी क्या कि जब हमने साधक का व्रत लिया, तब हाथ जोड़कर यह स्वीकारते हुए कहा था— आप जो कहोगे, वैसा ही हम करेंगे। आपका वचन, मेरा जीवन।

श्रीजी महाराज ने स्वयं कहा है कि मेरा वचन ही मेरा स्वरूप है। सो, हमने जो वफ़ादारी का वचन दिया है, उसका पालन करना है। यह करते हुए जो भी बाधाएँ आयें, उसे धकेलने की ताकत भजन और माहात्म्य युक्त सेवा से मिलती है। धुन-भजन व प्रार्थना करते हुए सिंसियर रहेंगे, तो बल अवश्य ही प्राप्त होगा।

सन् 1956 की बात है। पप्पाजी ऑफिस जा रहे थे और मुझे घर जाना था। तो, स्टेशन तक छोड़ने के लिये पप्पाजी ने मुझे अपने साथ टैक्सी में बिठा लिया। तीन-चार मिनिट का रास्ता था। उस दौरान मैंने पप्पाजी से कहा कि मुझे भगवान भजने हैं। तो, पप्पाजी ने इस विषय पर बहुत सारी बातें बताई कि साधना मार्ग में ऐसा होता है—वैसा होता है। जब स्टेशन आया, तो मैंने पप्पाजी से कहा—बाबुभाई आपने जो-जो समझाया, मैं वो सब करूँगी पर आपके बल, आधार व आश्रय से। पप्पाजी टैक्सी से उतरे और मुझे कौल दिया—मेरे बल, आधार व आश्रय से मैं कराऊँगा। फिर प्रसंग खड़े हुए, साधना शुरु हुई। हठ, मान, ईर्ष्या आकर खड़े हो गये। मुझे तो ऐसा ही था कि मुझ में कुछ है ही



नहीं। पर, जब सब बाहर निकलने लगे, तब मुझे ऐसा होता था कि बाबुभाई बल क्यों नहीं देते? एक दिन मैंने बाबुभाई से कहा कि आप मुझे बल नहीं देते, इसलिये ये सब हो जाता है। पप्पाजी ने मुझसे कहा— तूने मुझसे कभी भी बल माँगा? तूने बल माँगा हो और न मिला हो, तो मुझे बता। फिर मैंने विचार किया कि सच में मैं बल नहीं माँगती। हाँ, इसने ऐसा किया—वैसा किया। इसे ऐसा नहीं करना चाहिये था। इसके कारण ऐसा हुआ, मेरा अपमान हो गया। मुझे बहुत दुःख लगा वगैरह-वगैरह... इन सबने ऐसा किया।

एक बात का ध्यान रखना। जिसे जो सेवा सौंपी गई हो, उसे मान्य करना सीखना चाहिये।

कल साहेब ने अच्छी बात की, गुरुजी ने चैतसिक की बात करी और दिनकरभाई खास शिकागो से पधारे। लेकिन खूब आनंद हुआ। मेरे लिये पप्पा, उसके काका और गुरुजी, ऐसा नहीं। तुम्हारे चैतन्य के लिये जिस स्वरूप की ज़रूरत है, वहाँ तुम्हें रखा है... पप्पाजी को जो संप, सुहृदभाव, एकता रखवानी है, वो रखवानी न पड़े बल्कि अंतर से हो जाये। यह तो स्वामिनारायण का परिवार है, उसमें भी योगी का परिवार है। उसमें गुणातीत समाज में काका, पप्पा और बा का परिवार बैठा है। उसमें स्वामी, साहेब, गुरुजी उनके बेटे और बहनें लड़कियाँ हैं। हम एक समाज के हैं, एक ध्येय है। तो, हमें क्या करना है? मेरे अंतर का सुख किसी भी संजोग में जाये नहीं, ऐसी प्राप्ति करनी है। हमारे सत्पुरुष समर्थ हैं। उनसे क्या आशीर्वाद मांगने? वे अपने आप देंगे। हम इनके हैं। माँ-बाप तो अपने बालकों को ही देते हैं। हम उनके हैं, तो वे हमें देंगे ही। हमें सत्पुरुष के वचन को अपना जीवन बनाना है। यह हमारा कर्तव्य, साधना और जीवन है... हमें कहीं न कहीं तो अपना 'स्व' छोड़ना ही पड़ता है। तभी तो पप्पाजी ने कहा— गरजू बन कर सेवा करो और दिव्यभाव रख कर सहन करो। यदि ऐसा हम करते रहते, तो आनंद महसूस होता। ब्रह्म का गुण आनंद है। इनका वचन हमारा जीवन बने... कोई भी एक वचन लेकर हमारे जीवन को सही अर्थ में हमारे स्वरूप के प्रति समर्पित हो जायें... अब हमारा मन टोटल उन्हें सौंप दें। हमारा मन उनकी प्रसन्नता के सिवा और कुछ अपेक्षा ही न रखे, ऐसे हम बन जायें—हे महाराज, ऐसी कृपा करना।

उत्सव के समापन में गुणातीत ज्योत की डॉक्टर्स बहनों ने मंचस्थ स्वरूप बहनों को हार अर्पण करके अपना भाव प्रकट किया। प.पू. हंसा दीदी ने वर्ष 2022 के



केलेन्डर और **प.पू. देवी बहन** ने गुरुहरि पप्पाजी की छाया आकृति वाली **घड़ी** का अनावरण किया। इस घड़ी की विशेषता यह है कि समय के अंतराल पर गुरुहरि पप्पाजी की आवाज़ में जय स्वामिनारायण, भजन की पंक्ति और जीवनमंत्र सुनाई देता है। बहनों ने मंचस्थ स्वरूप बहनों को शॉल ओढ़ा कर सम्मानित किया और गुरुहरि पप्पाजी द्वारा निरूपित भजनों की पेंड्राईव की स्मृति भेंट दी। हरिधाम-भक्तिआश्रम की बहनों ने भी मंचस्थ स्वरूप बहनों को स्मृति प्रार्थना अर्पण की। विडियो द्वारा गुरुहरि पप्पाजी का आशीर्वाद प्राप्त किया। नवीनता से उत्सव का समापन करने हेतु, गुणातीत समाज के सभी केन्द्रों के प्रतीक चिन्हों को फूलों की लड़ियों द्वारा एक-दूजे से जोड़ कर बहनों उपस्थित हुईं, तब सुरवृंद ने प्रार्थना गाई—

संप, सुहृदभाव, निर्दोषबुद्धि राखी राजी करीये...

एकता राखी, माहात्म्य समझी, सेवा तारी रीते करीये...

तव संकल्प अम जीवन बने, एवं करी दे नाथ...

और... स्वरूपों के निरामय स्वास्थ्य की प्रार्थना-धुन से उत्सव का विसर्जन हुआ।

26 दिसंबर को बहनों की सभा होने के कारण प.पू. गुरुजी तो प.पू. वशीभाई एवं संतों के साथ 25 सायं अमदावाद चले गये थे और वहाँ हेतवी टॉवर्स में **पू. शैलेशभाई** एवं **पू. परिमलभाई आचार्य** के घर ठहरे। सो, 'पप्पाजी स्मृति सौरभ उत्सव' की पूर्णाहुति के बाद प.पू. दीदी अमदावाद के लिये रवाना हुईं। **अमदावाद** पहुँच कर दिल्ली मंदिर से जुड़े पुराने जोगी **पू. रमणभाई** एवं **पू. दमयंती बहन पकाई** के दामाद **पू. शैलेशभाई शाह** एवं सुपुत्री **पू. मयूरी बहन** की बेकरी शॉप और **पू. मेहुलभाई** एवं **पू. धरती बहन ठक्कर** के घर पधरामणी की। तत्पश्चात् **पू. विपुलभाई** एवं **पू. दीपा बहन ठक्कर** के '**डैज़ी डिज़ाईनर स्टुडियो**' गये। **प.पू. गुरुजी** भी **प.पू. वशीभाई** व संतों के साथ वहाँ पधारे। यहाँ धुन-भजन करके, आइसक्रीम का प्रसाद लेकर सभी पू. विपुलभाई के घर गये। वहाँ ठाकुरजी का थाल व प्रसाद लेकर रात को हेतवी टॉवर्स ठहरने गये। दूसरे दिन सुबह प.पू. गुरुजी **परम श्रद्धेय आचार्य श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराज** के दर्शनार्थ जाने वाले थे, लेकिन देर रात को थोड़ी तबियत नासाज़ होने के कारण नहीं गये। सो, **प.पू. वशीभाई** के साथ कुछ भाई गये और उन्हें 'साधु पर्व' के लिये आमंत्रित करके आये। दोपहर को हेतवी टॉवर्स में ही **पू. परेशभाई दोषी** के घर धुन-भजन व सभी को आनंद करा कर, श्री ठाकुरजी का थाल व प्रसाद लेकर सभी एयरपोर्ट के लिये रवाना हुए और दिल्ली लौटे।



14 जनवरी से 17 जनवरी 2022

अनुपम मिशन में कलश स्थापना निमित्त शोभा यात्रा एवं महायज्ञ सहित पूजन...



‘श्री स्वामिनारायण मंदिर कलश महोत्सव’ का उद्घाटन...



‘कलश महोत्सव’ की महाआरती एवं पाटीत्सव...



‘कलश महोत्सव’ पूर्णाहुति सभा की स्मृतियाँ...



2022 की पौषी पूर्णिमा... बनी गुणातीत समाज की ऐतिहासिक पूर्णिमा!

आपको ज्ञात होगा कि 2020 में पौषी पूर्णिमा के महामंगलकारी दिन हमारे अनुपम मिशन के नवनिर्मित मंदिर में श्री ठाकुरजी महाराज एवं गुणातीत स्वरूप विराजमान हुए थे।

अब दो वर्ष पश्चात् 17 जनवरी 2022 की पौषी पूर्णिमा—मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामीजी के दीक्षा दिन के शुभ-पवित्र दिन पर मंदिर के शिखरों पर कलश-ध्वजा की स्थापन विधि से यह दिन गुणातीत समाज के इतिहास में स्वर्णाक्षरों से अंकित हुआ। संतभगवंत साहेबजी की आज्ञा से आयोजित इस महोत्सव में गुणातीत समाज के केन्द्रों के प्रतिनिधियों की निश्रा में, सभी अनुयायी अद्भुत लाभ प्राप्त करने आतुर थे।

सो, जनवरी के प्रथम सप्ताह तक तो अनुपम मिशन से जुड़े देश-विदेश के कई मुक्त सेवा हेतु आ गये थे। परंतु, उसी दौरान कोरोना के पुनः बढ़ते प्रकोप के कारण, सीमित मुक्तों की हाज़िरी में महोत्सव मनाने का संतभगवंत साहेबजी ने आदेश दिया। अतः दिल्ली से प.पू. गुरुजी, मुंबई से प.पू. दिनकर अंकल, प.पू. भरतभाई, प.पू. वशीभाई एवं मुक्त समाज शामिल नहीं हो पाया। लेकिन, इंटरनेट के माध्यम से 14 से 17 जनवरी तक संपन्न हुए इस महोत्सव का सभी ने घर बैठ कर दर्शन-समागम किया।

इस आयोजन में गुणातीत स्वरूपों एवं वरिष्ठ संतों ने गुजराती भाषा में जो आशिष दी, उसे हिन्दी में संक्षिप्त प्रस्तुत कर रहे हैं...

14 जनवरी की सुबह करीब 9:30 बजे सुनहरे मयूर रथ पर विराजमान संतभगवंत साहेबजी मंदिर के समक्ष बनी यज्ञशाला में पधारे। रथ पर मंदिर के छः छोटे कलश रखे थे, जिन्हें संतों ने छः यज्ञवेदियों पर स्थापित किया। संतभगवंत साहेबजी, प.पू. अश्विनभाई, प.पू. शांतिभाई के द्वारा मुख्य कलशों का पूजन करवा कर, उनकी निश्रा में पू. डॉ. मनोजभाई सोनी एवं सुरवृंद के भाइयों ने शास्त्रोक्त विधि से यज्ञ संपन्न कराया। कोरोना के नियमों का पालन करते हुए गुणातीत ज्योत से प.पू. माया बहन कुछ बहनों के साथ यज्ञ का लाभ लेने उपस्थित हुईं। अनुपम मिशन से जुड़े गुजरात के कई स्थानों के अट्ठारह गृहस्थ नवयुवकों ने विशिष्ट हार कलशों को अर्पित किया। यज्ञ की पूर्णाहुति होने पर संतभगवंत साहेबजी ने आशीर्वाद देते हुए कहा—



14 जनवरी... मकरसंक्रांति का पुण्य दिन। गद्दी पर बैठने के बाद स्वामिनारायण भगवान ने रामानंदस्वामी से दो वरदान मांगे कि मेरा जो भी आश्रित हो, वह अन्न, जल, वस्त्र से कभी वंचित न हो। उसे कभी भी भीख न मांगनी पड़े और उसके प्रारब्ध में एक बिच्छु के डंक का दुःख हो, तो मुझे अनंत बिच्छु के डंक का दुःख हो।

मकरसंक्रांति जैसे दिनों पर सभी दान-दक्षिणा देने की इच्छा रखते हैं। कहा जाता है कि आज के दिन सूर्यदेव उत्तरायण में प्रवेश करते हैं। निम्न कक्षा से उच्च कक्षा पर जीवन जीना, यही भगवान और संतों की हम से अपेक्षा है... स्वामिनारायण भगवान ने संतों और परमहंसों को आज्ञा दी कि पूरे वर्ष आप भले विचरण करो, लेकिन मकरसंक्रांति के दिन आप भिक्षा मांगने के लिये निकलना। योगीजी महाराज, महंतस्वामी के साथ हमने सोखड़ा में भिक्षा मांगी है। तब बापा 'नारायण हरे, सच्चिदानंद प्रभो' की अलख जगाते, जिससे सारा गाँव जाग्रत हो जाता और गेहूँ, चावल व दाल सभी देते। ऐसे दिन आज यज्ञ व पूजन करके कलश महोत्सव की शुभ शुरुआत हुई। संतों-हरिभक्तों को धन्यवाद है कि गाँव-गाँव घूम कर, सबसे कलशों का पूजन कराया। आज कलशों की अंतिम यात्रा ब्रह्मज्योति में निकली... आज हमें उनका पूजन करने का अवसर मिला। भगवान की खूब कृपा हो, तब ऐसे कार्यक्रम में उपस्थित होने का मौका मिलता है। आप सब भगवान के कृपापात्र भक्त हो... कोई भी कार्य संपन्न होता, तो बापा कहते— **कलश चढ़ गये।** बापा से प्रार्थना करनी है कि **हमारे भी कलश चढ़ा देना। मंदिर बनाने और कलश चढ़ाने में जिस-जिसने तन, मन, धन और आत्मा से सेवा की है, उन सभी में गुणातीतभाव प्रगटे, ऐसे कलश चढ़ा देना। हम सभी का लक्ष्य है कि गुणातीतभाव को पाना, देहभाव से रहित होना और अहंकार रहित जीवन जीना।** जब तक जिएं, तो अहंकार रहित, झीरोनेस पर जियें। परिस्थिति सानूकूल-प्रतिकूल कैसी भी हो, लेकिन अंतर का आनंद व शांति जाये नहीं। गुणातीतभाव को पाये बिना परमानंद, शांति और सुख प्राप्त होता नहीं।

गुणातीतभाव प्राप्त कराने के लिये स्वामिनारायण भगवान गुणातीतानंदस्वामी को साथ में लेकर आये। गुणातीतानंदस्वामी ने गुणातीतभाव का दर्शन कराया। वही दर्शन गुरुदेव योगीजी महाराज, प्रमुखस्वामी, काकाजी, पप्पाजी, स्वामीजी ने कराया। वर्तमान समय में महंतस्वामी, शांतिभाई, अश्विनभाई जैसे करा रहे हैं। इस भाव को हमें प्राप्त करना है। हम तप, व्रत नहीं कर सकते और हमारी देह भी ऐसी नहीं कि किसी साधन से भगवान को राज़ी कर सकें।



भगवान को राजी करने उनकी कृपा प्राप्त करें। भगवान की कृपा किस प्रकार प्राप्त होती है? तो, भगवान सर्वोपरि, कर्ता-हर्ता और मुझे मिले सत्पुरुष द्वारा प्रगट हैं, यूँ समझ कर दो हाथ जोड़ कर उनकी आज्ञा का पालन करें, उनके कार्य में याहोम हो जायें, तब उनके राजी होने पर देहभाव पिघल जाता है।

सत्पुरुष की मरजी से मंदिर बनाना, कलश महोत्सव या ऐसे उत्सव करने का हेतु यही है कि इसके द्वारा सत्पुरुष की प्रसन्नता हम पर बरसेगी, तो हमारे जड़ स्वभाव व प्रकृति, अहंकार पिघल जायेंगे और हम सुखी-सुखी हो जायेंगे। प्रभु सब पर खूब आशीर्वाद बरसायें। भगवान, साधु और ऐसा अद्भुत समाज व मानव देह मिला है, तो जाग्रतता रख कर, भगवान की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिये इस देह का श्रेष्ठ से श्रेष्ठ उपयोग करना है...

महोत्सव की मंगल शुरुआत पर सद्गुरु संत **प.पू. अश्विनभाई** ने आशीष वर्षा की—
...गुरुदेव साहेब दादा के कहे अनुसार हम सभी के हृदय में प्रगट प्रभु की मूर्ति स्थापित हो, ऐसी आज उत्तरायण के मंगल दिन पर सभी संतों की ओर से मंगल कामना करते हैं।

मंदिर, मूर्ति, शिखर, उसके ऊपर के कलश और धर्म की ध्वजा ये पाँच प्रतीक हमारी आस्था और श्रद्धा का परिणाम हैं।

दूर से भी यदि धर्म की ध्वजा का दर्शन हो जायें, तो मानो प्रभु और उनके धारक संत तथा मुक्तों के दर्शन हो जाते हैं...

मुंबई-दादर के पुराने मंदिर में गुरुदेव योगीजी महाराज ने एक बार आशीर्वाद दिया था—
दादर मंदिर के टॉवर के ऊपर से उड़ कर जाते पक्षी का भी कल्याण होगा। हम तो मंदिर के प्रांगण में-उसकी गोद में बैठे हैं! हम सभी भगवान के सुख से सुखी हों, ऐसी हृदय भावना है। तत्पश्चात् विसर्जन प्रार्थना से यज्ञ-कलश पूजन सभा का समापन हुआ।

सायं करीब पाँच बजे भजन संध्या द्वारा हो रहे महोत्सव के शुभारंभ में भाग लेने भक्त सभा मंडप में एकत्र हुए। गुरुहरि योगीजी महाराज के वचन—‘पात्र भी मैं घड़ूंगा और ब्रह्मरस भी मैं भरूँगा’ की स्मृति करते हुए, **प.पू. शांतिभाई** एवं **पू. डॉ. मनोजभाई सोनी** ने मंडप का नाम ‘**ब्रह्मकलश**’ रखा था। मंच की पृष्ठभूमि पर मंदिर के शिखरों पर शोभित कलशों एवं श्री अक्षरपुरुषोत्तम महाराज सहित सभी गुणातीत स्वरूपों की मूर्ति का दर्शन हो रहा था।

सर्वप्रथम ‘**श्री स्वामिनारायण मंदिर कलश महोत्सव**’ के अध्यक्ष सद्गुरु संत **प.पू. अश्विनभाई** ने श्री ठाकुरजी के समक्ष दीप प्रज्वलित



करके सभी की ओर से प्रार्थना की। तत्पश्चात् **प.पू. अश्विनभाई** एवं **प.पू. शांतिभाई** की निश्रा में अनुपम मिशन से जुड़े देश-विदेश के प्रतिनिधियों ने पाँच दीप पुंजों को प्रज्वलित करके महोत्सव का उद्घाटन किया और... कई मुक्तों ने संतभगवंत साहेबजी के समक्ष भजनों द्वारा अपना भाव प्रकट किया।

गुरुसभा के बालकों ने **पू. डॉ. मनोजभाई सोनी** द्वारा रचित भजन — *जय स्वामिनारायण, जय श्री अक्षरपुरुषोत्तम... आव्यो मंदिर कलश महोत्सव दिगंतमां गाजे पड़घम...* पर नृत्यभक्ति अदा की। संतभगवंत साहेबजी वरिष्ठ संत भाइयों के संग मंच पर सभी को आशीर्वाद देने पधारे। तत्पश्चात् **प.पू. शांतिभाई** ने ‘कीर्तन संहिता’ भजन संग्रह का उद्घाटन किया। **प.पू. अश्विनभाई** ने महोत्सव की उद्घोषणा करते हुए सबका आभार व्यक्त किया —

...मेरी समझ में ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज अनेक प्रकार और स्वरूप में नयनगोचर होते जा रहे हैं। अनेक पत्रों में योगीजी महाराज ने जसुभाई पर आशीर्वाद बरसाये हैं। उसमें से एक आशीर्वाद था...

आप जो संकल्प करोगे, वो पूरा होगा...

आज उनका संकल्प साकार रूप ले रहा है, उसके दर्शन का खूब आनंद है...

कलश महोत्सव निमित्त एक अन्य भजन संग्रह — ‘संप, सुहृदभाव, एकता... साहेबदादानी प्रसन्नता!’ का अनावरण संतभगवंत साहेबजी ने किया। इस संग्रह के एक भजन में संतभगवंत साहेबजी, **प.पू. अश्विनभाई** एवं **प.पू. शांतिभाई** ने संप, सुहृदभाव, एकता का मर्म स्वयं गाकर समझाया है।

प.पू. शांतिभाई ने आशीष देते हुए कहा —

...आज कलश महोत्सव मना रहे हैं। जब से मंदिर का निर्माण कार्य शुरू हुआ, तब से साहेब दादा ने हमारे हृदय मंदिर में भी प्रभु पधराने का संकल्प किया है... साहेब ने स्वयं अपने जीवन का हेतु बताते हुए कहा है कि शास्त्रीजी महाराज और योगीजी महाराज ने श्री अक्षरपुरुषोत्तम की जो उपासना स्थापी, उसे सतत गतिशील रखना ही एक उद्देश्य है। उसका दर्शन आज हम कर रहे हैं... साहेब जैसे दिव्य पुरुष हमें देने के लिये तत्पर हैं। हमारा अंतर ऐसा निर्मल और प्रकाशित हो कि आप जो देने के लिये बैठे हैं, उसे हमारे जीवन के प्रत्येक क्षण में

स्वीकार कर सकें और आचरण में लायें। आपने एकता, सुहृदभाव और आत्मीयता के बारे में बहुत बार समझाया है। पर, आज हे प्रभु, हे साहेब दादा एक ही प्रार्थना करनी है कि हमारा अंतर प्रति पल जाग्रत रहे कि आप जो समझाते हैं, उसे



स्वीकारने की क्षमता हम में आये। फलस्वरूप आपकी अखंड प्रसन्नता प्राप्त करें... **यदि एकता रखनी है, तो हमें हमारा 'स्व' छोड़ना पड़े। एकता तभी संभव होगी, जब अहं और देहभाव पिघल कर मुझमें दासभाव आ जाये।** भगवान स्वामिनारायण एवं गुणातीत स्वरूपों के संबंध वाले सभी के हृदय में ऐसी एकता का कायजा पक्का हो जाये और आपको प्रसन्न करते रहें...

अंत में संतभगवंत साहेबजी ने आशीर्वाद दिया —

...**भजन-प्रार्थना करके, प्रभु का बल लेकर जो आयोजन करते हैं, वह हृदयस्पर्शी होता है... कुछ भी संपन्न हो या न हो, छोटा हो या बड़ा, वो महत्त्वपूर्ण नहीं है। पर, जो कार्य प्रभु की प्रसन्नता दिलाता है, वो महत्त्वपूर्ण है।** संप, सुहृदभाव, एकता और मिलजुल कर जो कार्य होता है, वो सभी के हृदय को स्पर्श करता है। सच, स्वामिनारायण भगवान और योगीजी महाराज जैसे दिव्य पुरुष की कृपादृष्टि और काका, पप्पा, हरिप्रसादस्वामी, बा के प्रेम-भाव और सभी भक्त सेवा में ओतप्रोत हुए, तो सारे कार्य भगवान करते हैं... **जब से बापा की कृपादृष्टि हम सब पर पड़ी, तब से आज-इस पल तक हमारा रिमोट कंट्रोल उनके हाथ में है...** हमने हमारी रीति से जीवन जीने की कितनी कोशिश की, पर हमारी कुछ चली नहीं। पर, ये अश्विनभाई, शांतिभाई, रतिभाई, वी.एस., सनंदभाई, अरुण जैसे सद्गुरु की पंक्ति में बिठा देने से सद्गुरु नहीं हुए या टाईटल देने से सद्गुरु नहीं बने। ये सब भगवान की प्रसन्नता प्राप्त किये हुए हैं... **प्रसन्नता संसार में से हमारी आसक्ति छुड़ाती है...** चारों ओर अक्षरधाम का सुख प्राप्त हुआ है, पर यदि अमहिमा, भावफेर, अभाव-अवगुण की बातों में रस लेंगे, तो दुःखी होंगे... **उत्सव-महोत्सव इसीलिये होते हैं कि प्रभु की प्रसन्नता प्राप्त होने पर हम जहाँ अटके हैं, वहाँ से आगे जाते हैं...** प्रभु की प्रसन्नता प्राप्त करने का मौका मिला है, तो **सावधान होकर वह पाएं... एक जुट होकर भक्ति का परमानंद प्राप्त करें और माहात्म्य युक्त होकर इसकी सुवास चहुँ ओर प्रसरायें...**

अंत में जपयज्ञ के साथ सभा की पूर्णाहुति हुई।

15 जनवरी की सुबह 'श्री स्वामिनारायण कलश महोत्सव माहात्म्य पर्व' में पू. जीतूभाई पटेल (अमेरिका), गुजरात सरकार-राज्य कक्ष के ग्रामीण मंत्री श्री अर्जुन सिंह चौहान, पू. परेशभाई पटेल (अमेरिका) एवं पू. डॉ. मनोजभाई सोनी ने माहात्म्यगान किया। तत्पश्चात् प.पू. रतिभाई ने 'ब्रह्मज्योति कलशवंदना' भजन संग्रह का लोकार्पण किया और प.पू. शांतिभाई ने कहा —



50 वर्ष पहले मंदिर निर्माण कार्य का जिन्होंने संकल्प किया और लीड कर रहे हैं, ऐसे साहेबजी को उनके साथियों ने साथ दिया। योगीबापा ने उन्हें एक-दूजे से जोड़ा। साहेब जब से वल्लभ विद्यानगर पढ़ने के लिए आए, तब अश्विनभाई, रतिकाका, हर्षद दादा, डॉ. दादा, वी.एस. दादा और ये सभी संत उनके परिचय में आए। **पूर्व की प्रीति होने के कारण सभी ने साहेब को दिव्य, बड़ा, संत, गुरु व प्रभु का साकार स्वरूप माना।**

साहेब अकसर कहते हैं कि अश्विनभाई, रतिकाका वगैरह बड़े क्यों माने जाते हैं? जब से उनकी साहेब के साथ मित्रता हुई और बापा के संपर्क में आने के बाद उन्हें गुरु के रूप में स्वीकारा व स्थान दिया, तब से आज तक उन्होंने कोई प्रश्न नहीं पूछा। योगीबापा ने जैसा कहा, उन्होंने वैसा किया और 1971 में बापा के अंतर्धान होने के बाद, साहेब को बापा का स्वरूप मान कर उन्हें अपना जीवन समर्पित किया...

देश-विदेश में मंदिरों का निर्माण होने से इन संतों का साहेब के साथ संबंध दृढ़ होता गया। फलस्वरूप उनके हृदय में प्रभु व साहेब विराजमान हुए, जिसकी अनुभूति हम सभी को हो रही है। भीतर में प्रभु विराजमान होने का अर्थ साहेबजी ने कई बार समझाया है— **मन-बुद्धि वितर्क न करे, सभी का सहजता से स्वीकार करें। सुहृदभाव रखने का प्रयत्न करें। सुहृदभाव रखेंगे, तो दासभाव प्राप्त कर पायेंगे...**

इन बातों को पकड़ कर जीवन व्यतीत करने का प्रयत्न करना ही साहेब को प्रभु का स्वरूप माना कहा जाए। जिन्होंने समग्र साधना कराई, हठ, मान, ईर्ष्या, राग, द्वेष से निजात दिलाई, भगवान के संबंध वाले सब को यूं दिव्य मान कर वर्तने वाले साहेबजी रोम-रोम में बस गए। परिणाम स्वरूप आँखें खोल कर जगत को और मूंद कर जब अंतर में देखता हूँ, तो सर्वत्र प्रभु का दर्शन होता है। **सब में प्रभु का दर्शन करना है, वे दिव्य हैं और सब का दास बनना है। ये ज्ञान जो शास्त्र में था, उसे इन दिव्य पुरुषों ने अपने संकल्प से हमारे हृदय में स्थापित किया है... मंदिर निर्माण में जो भी तन, मन, धन और आत्मा से सेवा करते हैं, उन सभी की आत्मशुद्धि होती है। उनके हृदय में प्रभु विराजित होते हैं। सभी के राग-द्वेष टल जाते हैं, अहंता-ममता छूट जाती है और 'स्व' रहित हो जाते हैं...**

दिव्य पुरुषों का संकल्प शाश्वत् काल तक काम करता रहता है... आज शिखर पर कलश चढ़ रहे हैं। तो, सुहृदभाव, आत्मीयता, दिव्यभाव का कलश और साहेब दादा की महिमा का स्वर्ण कलश हमारे हृदय में भी स्थापित करना है... उपासना की दृढ़ता हो जाये ऐसे कलश चढ़ाने हैं...



योगीबापा ने साहेब को आशीर्वाद दिये— तुम्हारा हृदय भगवा करना है।

आज साहेब हम सब का हृदय भगवा करके भगवान का सुख बांट रहे हैं। **हमारा बहुत बड़ा भाग्य है कि ऐसे सत्पुरुष हमारे जीवन में आए। उनके संकल्प से हम सुखी हैं...**

हे दयालु! हे महाराज! हे योगीजी महाराज! आप हमारे लिए इस धरती पर मानवरूप में आए। सभी गुणातीत स्वरूप हमारे लिए इस धरती पर पधारे और हमारा हाथ थामा, हमें स्वीकारा। हमारे दोष टल रहे हैं, इसकी अनुभूति वे ही हमें करा रहे हैं... **जो ज्ञान आपने हमें दिया, वैसा जीने हम तत्पर रहें। सभी मुक्तों में प्रति पल आप जैसे योगीजी महाराज को देखते हैं, यह हम केवल बोलें नहीं, पर हमारे वर्तन में हो...**

संतभगवंत साहेबजी की प्रेरणा से कलश महोत्सव की एक विशिष्ट स्मृति भेंट बनाई थी। जिसमें **पीपल** के पत्ते के आकार के स्वर्ण पत्र पर, कमल के पुष्प में श्री मुक्ताक्षर पुरुषोत्तम महाराज की मूर्ति सहित शिक्षापत्री का श्लोक— निजात्मानं ब्रह्मरूपं एवं साहेबजी के हस्ताक्षर थे। गणमान्य अतिथियों एवं भक्तों ने सद्गुरु संतों के वरद हस्तों से यह सम्मान पत्र प्राप्त किया। अंत में **संतभगवंत साहेबजी** ने अपने निम्न आशीर्वचन द्वारा मुक्तों को अद्भुत प्रतिज्ञा कराई— **योगीबापा अकसर कहते थे कि वे अलौकिक पुरुष हैं।**

लौकिक यानि— मन, बुद्धि, चित्त, अहंता की भूमिका से प्रगटे हुए मूल्यांकन।

अलौकिक यानि— मन, बुद्धि, चित्त, अहंता की भूमिका से परे के मूल्यांकन।

महाराज, गुणातीतानंदस्वामी, शास्त्रीजी महाराज, योगीजी महाराज, काकाजी, पप्पाजी, प्रमुखस्वामी, महंतस्वामी, हरिप्रसादस्वामी, अक्षरविहारीस्वामी, गुरुजी, अश्विनभाई, शांतिभाई इन सब की बात अलौकिक है।

हम पर भगवान की अति कृपा है कि हम यह बात समझ पाए।

मेरे साथ सभी यह ब्रह्मसूत्र बोलें—

हमारे इष्टदेव स्वामिनारायण भगवान हैं। मेरे लिए सर्वोपरि हैं व मेरे हृदय में उनका स्थान सर्वोपरि है। मेरे पल-पल के कर्ता-हर्ता स्वामिनारायण भगवान ही हैं। वे भगवान मुझे गुणातीत साधु द्वारा साकार व प्रगट मिले हैं। उनसे आत्मबुद्धि व प्रीति दृढ़ करना ही मेरे जीवन का श्रेष्ठ कार्य है। उनकी आज्ञा में रह कर प्रवृत्ति करना ही मेरी अक्षरपुरुषोत्तम की उपासना है। अहोहोभाव, निर्दोषभाव, दिव्यभाव और मन, कर्म व वचन से मुक्तों की सेवा करना ही प्रभु की प्रसन्नता प्राप्त करने का श्रेष्ठ उपाय है।

यह बात हमें बार-बार इसलिए दोहरानी पड़ती है, क्योंकि यह बात



अलौकिक है।

भगवानधारक सत्पुरुष भगवान नहीं हैं, परंतु उनके द्वारा व उनमें रह कर भगवान हमें दर्शन व आशीर्वाद देते हैं। भगवान स्वामिनारायण ने हमें दो वरदान बख्शिष्ट दिए—

पहला— वड़ताल में महाराज ने स्वयं हरिकृष्ण महाराज की मूर्ति स्थापित करके आशिष दिए कि मैं इस ब्रह्मांड में अखंड प्रगट रहूंगा। यूँ कह कर भगवान स्वामिनारायण ने ‘स्थावर तीर्थ’ की स्थापना करी।

दूसरा— गुणातीत साधु द्वारा पृथ्वी पर अखंड रहूंगा... यह आशिष देकर, ‘जंगमतीर्थ’ की स्थापना करी।

योगीजी महाराज गुणातीतभाव को पाए हुए साधु थे। इनके द्वारा भगवान अखंड प्रगट थे। बापा ने दादुकाका को नंदाजी को साबरकांठा का इलेक्शन जिताने की आज्ञा करी थी। काकाजी ने आज्ञा शिरोधार्य करी, जिसके फलस्वरूप बापा ने उन्हें साक्षात्कार कराया और काकाजी भगवानधारक ब्रह्मस्वरूप साधु बन गए...

यदि, प्रगट सत्पुरुष की आज्ञा अनुसार प्रवृत्ति करेंगे, तो ही भगवान के अंतर की प्रसन्नता प्राप्त होगी और हठ, मान व ईर्ष्या के विकार टल जाएंगे...

बापा, गुणातीतानंदस्वामी के दीक्षा दिन की बहुत महिमा गाते थे कि महाराज ने गुणातीतानंदस्वामी को दीक्षा देकर समग्र सत्संग समाज को सनाथ किया। महाराज के रहने का धाम गुणातीतानंदस्वामी थे। अक्षरधामरूप साधु इस धरती पर अखंड रहेंगे, यह वरदान देकर हमें निहाल कर दिया... गुणातीतभाव प्रगटाना, दासत्वभाव से भक्ति करना व सब को प्रभुरूप मान कर मन, कर्म, वचन से सेवा करना—अक्षरधाम के मुक्त का लक्षण हैं। इस भूमिका पर पहुँचने के लिए ऐसे उत्सव व समारोह का आयोजन होता है। सेवा ही एक माध्यम है जिसके द्वारा संप, सुहृदभाव व एकता से मिल-जुलकर, एक-दूसरे का स्वीकार करके पूरक बनते हैं। फलस्वरूप भगवान राजी होकर हमारे स्वभाव, प्रकृति व देहभाव की कसर टाल देते हैं। बापा ने हमें विशिष्ट आज्ञा करी थी कि दादुभाई जो कहें वह करना। इसलिए काकाजी हमारे लिए बापा का ही स्वरूप थे। काकाजी की प्रत्येक आज्ञा को बापा की आज्ञा मान कर जीवन जीया...

गुणातीत साधु की आज्ञा में रह कर संप, सुहृदभाव व एकता से भक्ति करेंगे, तो गुणातीतभाव का कलश चढ़ जाएगा...

15 जनवरी की सायं अनादि अक्षरब्रह्म ‘श्री गुणातीतानंदस्वामीजी महादीक्षा



माहात्म्य पर्व' हेतु सभी 'ब्रह्मकलश' में एकत्र हुए। पू. बिमलभाई पटेल-अमेरिका व पू. भाविशा बहन ने प्रासंगिक उद्बोधन किया और फिर पू. सतीशभाई चटवाणी-लंदन ने वीडियो द्वारा माहात्म्यगान किया। तत्पश्चात् ऑडियो 'साधु रे साधो' कीर्तन संग्रह का संतभगवंत साहेबजी ने अनावरण किया। सद्गुरु संत प.पू. अश्विनभाई ने गुणातीत दीक्षा माहात्म्य के उपलक्ष्य में आशीर्दान दिया —

...जिनके द्वारा भगवान श्री स्वामिनारायण इस सृष्टि पर मनुष्य कल्याण हेतु सदैव के लिए उपस्थित हैं, उन्हें हम गुणातीतानंदस्वामी के रूप में पहचानते हैं... **गुणातीत दीक्षा दिन यानि साधु की महिमा समझने का दिन!** भगवान जिनमें अखंड निवास करते हैं, वो गुणातीत साधु की परिभाषा है। उन्हें भगवान का अखंड अनुसंधान रहता है। ऐसे **गुणातीत साधु हैं योगीजी महाराज! शास्त्रीजी महाराज** कहते थे—

मुनि वेद व्यासजी ने भगवत् गीता में साधु के 64 लक्षणों का वर्णन किया है। यदि उनसे कोई गुण लिखने रह गए होंगे, तो उसका दर्शन योगीजी महाराज के जीवन से होता है। **योगीजी महाराज की गुणातीत स्थिति यानि दासत्वभक्ति!**

बापा से किसी ने पूछा— आपने ब्राह्मी स्थिति कैसे प्राप्त करी?

बापा ने उत्तर दिया— बरतन धोने की सेवा करके...

यूँ, बरतन धोने से बापा को ब्रह्मज्ञान प्राप्त हुआ। वह ब्रह्मज्ञान क्या कि मैं अक्षर हूँ, आत्मा हूँ! **मेरे भीतर परमात्मा-परब्रह्म पुरुषोत्तम नारायण अखंड विराजमान हैं...**

ऐसा अखंड अनुसंधान रहे और इस प्रकार जीवन जीने का निरंतर प्रयास करते रहें, तो हृदय में दिन-प्रतिदिन प्रभु की अनुभूति दृढ़ होती जाती है... सो, हमें मिले गुणातीत साधु की स्मृति व उनके दिए वचन को अपने जीवन-आचरण में लाने के लिए हृदयस्थ करें...

...पिछले पचास साल से **साहेब दादा** के साथ रहते हुए उनकी गुणातीत स्थिति का दर्शन हो रहा है। **किसी भी साधक या भक्त का कोई भी सूचन हो, उसे वे मानते हैं कि उसमें महाराज व मेरे गुरुदेव योगीजी महाराज प्रवेश होकर मुझे सूचन दे रहे हैं...**

एक साधक ने मुझसे साधना के विषय में पूछा कि शीघ्रातिशीघ्र ब्राह्मी स्थिति कैसे प्राप्त होती है?

मैंने कहा— इस बात का वर्णन शब्दों में नहीं किया जा सकता। मानो, आपके पास गाड़ी है और घोर अंधेरी रात में ड्राईव करना है। उसकी हेडलाइट की रोशनी से कम से कम दस फुट तक का रास्ता आपको नज़र आएगा। फिर



गाड़ी जैसे-जैसे आगे बढ़ती जाएगी, वैसे-वैसे उसका प्रकाश आगे बढ़ता जाएगा। इसी प्रकार जैसे-जैसे हम जीने लगेंगे, गुणातीत ज्ञान का कायजा हमें समझ आने लगेगा...

गुणातीतानंदस्वामी के अनुसार जिन्हें भगवान व गुणातीत साधु का जोग हुआ, उसके लिए वही अक्षरधाम है। जीतेजी हमें अक्षरधाम का सुख प्राप्त हुआ है, तो अब साथी-मुक्तों के साथ संप, सुहृदभाव व एकता से जीने लगे...

जिस प्रकार माँ बालक को नहला-धुला कर, साफ-सुथरा करके पिता को सौंपती है। उसी प्रकार **गुणातीत माँ** यानि **साधु हमारे स्वभाव, प्रकृति, हठ, मान व ईर्ष्या की ग्रंथियों को पिघला कर प्रभु के श्रीचरणों में अर्पित करने योग्य बनाते हैं।**

गुणातीत दीक्षा दिन तो गुणातीत गुरु को हृदय से स्वीकार करके प्रार्थना करने का दिन है। हमारे जीवन आचरण में प्रगट प्रभु के अनुरूप ही वाणी, वर्तन और विचार हो ऐसा संकल्प करें। यह भाव जब हमारे भीतर प्रगटेगा, तब गुरु कृपा से पाँचों इंद्रियाँ पवित्र बनेंगी व प्रभु यानि धर्म की ध्वजा लहरायेगी...

16 जनवरी की सुबह अनुपम मिशन में प्रति वर्ष आयोजित होते 'शालीन मानव रत्न सम्मान समारोह' में **प.पू. हंसा दीदी, प.पू. माया बहन** के साथ दर्शन का लाभ देने पधारीं। सद्गुरु संत **प.पू. अश्विनभाई** ने उत्तर प्रदेश की राज्यपाल माननीय श्रीमती आनंदी बहन पटेल के साथ-साथ शालीन मानव रत्न सम्मान प्राप्त करने आये **डॉ. श्री भरतभाई दवे एवं डॉ. श्री पार्थिवभाई महेता** का स्वागत एवं आभार प्रकट किया। **वैश्वनाचार्य गोस्वामी 108 परम पूज्य श्री ब्रजकुमारजी** अपना लाभ देने उत्सव में आये। मंचस्थ स्वरूपों एवं महानुभावों का हार से स्वागत किया गया। सम्मान पत्र एवं कलश महोत्सव की स्मृति भेंट प्राप्त करके श्रीमती आनंदी बहन ने प्रासंगिक उद्बोधन किया। **संतभगवंत साहेबजी** ने आशीर्वाद दिया। तत्पश्चात् अन्य दो डॉक्टर्स का सम्मान पत्र एवं स्मृति भेंट से अभिवादन किया गया। दोनों ने संतभगवंत साहेबजी के प्रति अपना भाव व्यक्त किया।

200 वर्ष पहले मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामीजी की महिमा स्तोत्र **पूज्य अचिंत्यानंद ब्रह्मचारीजी** ने लिखे थे। उन्हें अनुपम मिशन स्वरुंद के संतों-सेवकों ने गान करके रिकॉर्ड किये। सो, 'श्रीगुणातीतानन्दमहिम्नस्तोत्रम्' कीर्तन संग्रह का विमोचन करके वैश्वनाचार्य गोस्वामी 108 परम पूज्य श्री ब्रजकुमारजी ने आशीर्वाद दिया। अनुपम मिशन के सद्गुरु संतों ने उनका अभिनंदन किया और अंत में **संतभगवंत साहेबजी** ने सम्मान प्राप्त किये तीनों गणमान्य अतिथियों के गुणों का वर्णन करते हुए पुनः आशीर्वाद दिया।



16 जनवरी की **सायं** अर्थात् पौषी पूर्णिमा की पूर्वसंध्या पर विडियो प्रस्तुतिकरण का आयोजन था। आरंभ में गुणातीत समाज के सर्वप्रथम व्रतधारी युवक **पू. गोरधनकाका मर्चंट** द्वारा रचित भजन 'योगी तारा गावामां गुणगान...' सुनते हुए सभी ने गुरुहरि योगीजी महाराज की विभिन्न मुद्राओं का दर्शन किया। कोरोना के कारण न्यूजीलैंड और आस्ट्रेलिया के भक्त भारत आने में असमर्थ रहे, तो उन्होंने कलश की आकृतियाँ बना कर अपने-अपने घर पर पूजन किया। साथ ही साथ, बहनों ने भक्तिनृत्य से अपना आनंद प्रकट किया। जिसका विडियो द्वारा दर्शन किया। अंत में संतभगवंत साहेबजी की प्रेरणा से अनुपम मिशन द्वारा निर्मित मंदिरों एवं उनके द्वारा किये जा रहे सामाजिक, राष्ट्रीय एवं आध्यात्मिक कार्यों की झांखियों से सभी तृप्त हुए।

17 जनवरी की **सुबह-पौषी पूर्णिमा**, **मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामीजी** के दीक्षा दिन पर 'कलश महोत्सव पूर्णाहुति पर्व' में, मयूर रथ पर विराजमान **संतभगवंत साहेबजी** ने सभा मंडप में प्रवेश किया। 'पधार्या हृदयाधिराज...' की गूंज के साथ करीब पचास युवकों ने मंदिर, गुणातीत समाज एवं अनुपम के ध्वज को फहराते हुए स्वागत किया। मंच पर संतभगवंत साहेबजी के विराजमान होने के बाद, आठ मुक्तों ने 'कर्मयोगी दीक्षा' प्राप्त की। **प.पू. निर्मलस्वामीजी**, **प.पू. प्रेमस्वरूपस्वामीजी**, **प.पू. बापुस्वामी** एवं **वैश्वनाथार्य गोस्वामी 108 प.पू. द्वारकेशलालजी** सभा में पधारें। मंचस्थ स्वरूपों एवं गणमान्य अतिथियों एवं बहनों के विभाग में गुणातीत ज्योत की **प.पू. माया बहन** एवं हरिधाम-भक्ति आश्रम की **प.पू. सर्वेश्वर बहन** का हार से स्वागत किया।

कर्मयोगी दीक्षा प्राप्त किये आठ मुक्तों का परिचय देते हुए **प.पू. अश्विनभाई** ने आशीर्वाद दिया।

भगवान स्वामिनारायण के समय **पूज्य दीनानाथ भट्ट** ने 'श्री नारायण स्तवनाष्टकम्' रचा था। अनुपम मिशन स्वरवृंद के भाइयों ने गाकर उसकी ऑडियो तैयार की थी। **वैश्वनाथार्य गोस्वामी 108 प.पू. द्वारकेशलालजी** ने उसका अनावरण करके आशीर्दान दिया। तत्पश्चात् **प.पू. प्रेमस्वरूपस्वामीजी** ने आशीर्वाद दिया —

...हम सब खूब भाग्यशाली हैं कि अक्षरपुरुषोत्तम की शुद्ध उपासना कराने के लिए गुणातीत पुरुषों ने हमारा हाथ थामा। शास्त्रीजी महाराज व योगीजी महाराज ने अपमान, उपेक्षा व तिस्कार सहन करके हम सब के लिए साधना का सुगम मार्ग प्रस्तुत किया व अक्षरपुरुषोत्तम की शुद्ध उपासना बख्शीश में दी...



गुणातीतानंदस्वामी की तीन बातें हमें अपने जीवन में सिद्ध करनी हैं—

✽ **भगवान के जिस स्वरूप की हमें प्राप्ति हुई है, उनके सिवा कहीं और सुख खोजना व्यर्थ है।**

✽ **अच्छे साधु का संग करना।**

✽ **साधु की मरज़ी में रहेंगे, तो भगवान निरंतर राज़ी रहेंगे।**

...बड़े सत्पुरुष से हमें लगाव व प्रेम होगा, तो साधना मार्ग पर अग्रसर होने की प्रेरणा भी वे ही देते हैं... हम कैसे भी हों, परंतु उनका प्रेम हमें इस मार्ग पर खींच लाता है...

गुणातीतानंदस्वामी ने अपनी बातों में कहा है—

✽ सत्पुरुष से लगाव हो, पर उनका वचन न माना जाये...

✽ सत्पुरुष के प्रति प्रेम हो, पर उनका विश्वास न हो पाये...

✽ सत्पुरुष के प्रति विश्वास हो, पर उनसे निष्कपटभाव का संबंध न हो पाये...

ऑक्सीजन से भी विशेष साधकों के लिए ये बातें समझने योग्य है कि ऐसा न हो...

भगवान स्वामिनारायण ने आशिष बरसाए कि अपने गुणातीत संतों द्वारा धरती पर अखंड रहेंगे। **काकाजी, पप्पाजी, स्वामीजी, अक्षरविहारीस्वामीजी, गुरुजी, साहेबजी जैसे गुणातीत पुरुष हमें मिले और उन्होंने हमारा हाथ थामा, हमें प्रेम दिया...**

महाराज ने वचनामृत मध्य¹³ में कहा है— मेरी दृष्टि में कोई छोटा-बड़ा नहीं है।

महाराज के इस कथन का दर्शन हमें साहेब के जीवन से होता है। उनके लिए कोई छोटा-बड़ा नहीं है। सबको एक समान प्रेम देते हैं। सभी गुणातीत पुरुषों का जीवन ऐसा ही है...

गुणातीतानंदस्वामी ने अपनी बातों में कहा है— **अच्छे साधु का संग करना। वह संग क्या? सत्पुरुष का वचन आत्मसात् करना ही संग करना कहा जाए।**

उनके वचन में विश्वास रहे, उनके समक्ष सरल वर्ते और मन-बुद्धि के तर्क लगाए बिना उनके प्रत्येक वचन को सहजता से स्वीकारें और उस प्रकार वर्तने का सहज मन हो— यही संग करना कहा जाए...

हम सब गुणातीत बाग के हैं और सत्पुरुष हमारा पालन-पोषण कर रहे हैं। अपने निर्व्याज प्रेम से हमारे अंतर को झंझोड़ कर, अपना संबंध देने के लिए जो परिश्रम कर रहे हैं, तो हम उन्हें साथ दें।

स्वामीजी अकसर कहते थे— हमने कोई परिश्रम नहीं किया, परंतु बापा ने हमें सुखी कर दिया।



- ✽ स्वामीजी ने बापा का **संप, सुहृदभाव और एकता** का अभिप्राय पहचाना!
और... अपने जीवन की अंतिम श्वास तक सुहृदभाव के पथ पर चले और अन्यो को भी प्रेरणा दी।
- ✽ बापा ने कहा है— **युवक मेरा हृदय हैं...**
बापा के इस कथन को शिरोधार्य करते हुए स्वामीजी ने युवा प्रवृत्ति को एहिमयत दी।
- ✽ विपरीत संजोगों में केवल **भगवान स्वामिनारायण और बापा की मरजी का ही आधार लिया।**
- ✽ भगवान स्वामिनारायण, गुणातीतानंदस्वामी और योगीजी महाराज के प्रति उन्हें **कभी अविश्वास नहीं आया।**

हे साहेब! आज के मंगलकारी दिन आपसे यही प्रार्थना कि हमें ऐसा बुद्धियोग मिले कि — गुणातीतानंदस्वामी की बातों के अनुसार हम अपना जीवन जियें।

बापा, काकाजी, पप्पाजी, स्वामीजी, आपके अभिप्राय को पहचान कर, उसके अनुसार जीवन जिएं। गुणातीत स्वरूपों के जीवन में निरंतर निमग्न रहें। निमग्न रहने का अर्थ स्वामीजी ने बताया है—

भगवान के संबंध वाले मुक्तों के पास 'स्व' का विसर्जन करना।

साहेब के जीवन में यह सहज दिखता है। जिस प्रकार साहेब ने बापा का सेवन किया, सदैव सरल व निर्विचार वर्ते, ऐसे हम जियेंगे, तो हमारी प्रगति होगी...

विदेश के मुक्त संतभगवंत साहेबजी की परावाणी से लाभांवित हो सकें, इस भावना से **पू. भाविशा बहून** ने अंग्रेजी में भावानुवाद किया है। समय-समय पर 'स्पीरीच्युअल इसन्स' पुस्तक के पाँच भाग अनावृत हो चुके हैं। महोत्सव निमित्त इसके छट्ठे भाग और 'छे माहात्म्यसभर वाणी सदा - भाग 9' का **पू. डॉ. जीतूभाई पटेल** एवं **पू. विजयभाई ठक्कर** ने लोकार्पण किया।

संजोगवश **प.पू. गुरुजी** इस महोत्सव में नहीं जा पाये, लेकिन विडियो द्वारा उन्होंने निम्न आशीर्वाद भेजा —

गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज और योगीजी महाराज की कृपा से मंदिरों द्वारा श्री अक्षरपुरुषोत्तम की युगल उपासना का मूल रहस्य चहुँ ओर फैला और... मुमुक्षुओं को एकांतिक धर्म सिद्ध कराने साधुता की क्षितिज समान अक्षरब्रह्म गुणातीतानंदस्वामी प्रगट हुए। स्वयं पूर्ण ब्रह्म होने के कारण पूर्णता को ही अपने जीवन में स्थान दिया।



✽ अश्विनी पूर्णिमा-शरदपूर्णिमा पर प्रगटे।

✽ कार्तिकी पूर्णिमा पर महाभिनिष्क्रमण किया

और

✽ **पौषी पूर्णिमा** पर भगवान स्वामिनारायण के वरद हस्त 'भागवती दीक्षा' प्राप्त करी।

शेरनी का दूध स्वर्ण पात्र में ही टिक सकता है। इसलिये जूनागढ़ मंदिर की मूर्तियों की प्राणप्रतिष्ठा के समय श्रीजी महाराज ने आशीर्वाद देते हुए कहा था—

‘ये गुणातीतानंदस्वामी—जो मेरा अक्षरधाम हैं, वे यहीं—जूनागढ़ में ही रहेंगे।

जो उनका दर्शन-समागम करेगा, उनका मैं जीतेजी ही कल्याण करूँगा।’

बापा भी ऐसे ही विज्ञनरी पुरुष होंगे कि साहेब के लिये बोले थे—

जशुभाई हमारे भागीदार हैं...

1967 में बापा की मरजी जान कर **काकाजी, पप्पाजी और सोनाबा** ने उन्हें व उनके साथीदारों को **‘नेकटाई साधु’** की दीक्षा देकर **‘कर्मयोगी साधु’** बनाया।

यह अनोखी **‘मंत्र दीक्षा’** उस समय कड़ियों के दिमाग में फिट नहीं बैठी, लेकिन आज साहेब और उनके साथीदार—अश्विनभाई, शांतिभाई द्वारा एक युगकार्य की गंगोत्री प्रवाहित हो रही है।

चैतन्यलक्ष्मी अनुपम कार्य की यह दिव्यगाथा शाश्वत् गूंजती रहेगी।

किसी भी कार्य का शुभारंभ करने के लिये **‘पौषी पूर्णिमा’** बहुत ही पावनकारी-मंगलकारी मानी जाती है।

इसीलिये **2020 की पौषी पूर्णिमा-10 जनवरी** को तपोभूमि ब्रह्मज्योति के प्रांगण में नवनिर्मित मंदिर में श्री ठाकुरजी की प्राण प्रतिष्ठा हुई थी, जिसका दर्शन करने का हमें अवसर मिला और

अब **2022 की पौषी पूर्णिमा-17 जनवरी** को मंदिर के शिखरों पर कलश स्थापित हो रहे हैं। कोरोना के कारण हम आ तो नहीं सके, लेकिन दिल तो वहीं है।

कलश का रहस्य समझाते हुए शास्त्र लिखते हैं कि—

संजोगवश कोई यदि मंदिर न जा सकें, पर बाहर से कलश और ध्वजा का दर्शन करके प्रणाम करेगा, तो मंदिर के अंदर जाकर श्री ठाकुरजी के दर्शन करने जितना ही पुण्य मिलता है।

यहाँ तो मंदिर के प्राणपुरुष साहेब की निश्चा में भगवान भजते संत भाइयों



का दर्शन, सेवा और समागम मिलता है; वो सभी को जन्म-मरण के चक्र और प्रारब्ध-प्रकृति से मुक्त करेगा ही।

कई कहते हैं कि मंदिरों की क्या ज़रूरत है? हम बालक को कीडरगार्डन में इसलिये भेजते हैं कि घर के संकुचित दायरे से बाहर निकल कर, वह अन्य व्यक्तियों के साथ मेल-जोल सीखें। इसी प्रकार, **जीव को हठ, मान, ईर्ष्या के दायरों में से मुक्त कराने प्रभु और ऐसे संत की कृपादृष्टि चाहिये।**

हम बहुत भाग्यशाली हैं कि भगवान स्वामिनारायण ने हमें अपनी अखंड गुरु परंपरा के संतों—योगीजी महाराज, काकाजी महाराज, पप्पाजी महाराज, प्रमुखस्वामी महाराज, महंतस्वामी महाराज, स्वामीजी, साहेब, अक्षरविहारीस्वामीजी की गोद में बिठा दिया। इनके द्वारा अक्षरपुरुषोत्तम महाराज की प्रगट की युगल उपासना का जयघोष देश-विदेश में हो रहा है।

- * मंदिर भक्तों की तृष्णा मिटाते हैं।
- * मंदिर भक्ति और सेवा का पोषण करते हैं।
- * मंदिर मनुष्यमात्र को सुखी करने के लिये संस्कृति का जतन करते हैं।
- * मंदिर चरित्र निर्माण का अद्वितीय माध्यम हैं और आस्था व श्रद्धा का अद्भुत केन्द्र हैं।

मंदिर की कलशविधि हो रही है, तब 1986 की 26 जनवरी पर **काकाजी** द्वारा दिये आशीर्वाद मेरे अंतर में गूंज रहे हैं—

‘गुणातीत भावना वाले साधु बनो...’

हमें ऐसा साधु बनना है जहाँ ‘मन का आभास’ भी न हो...

हमें शास्त्री महाराज और योगी महाराज की खूब शोभा बढ़ानी है...’

तो, काकाजी, पप्पाजी और स्वामीजी भले ही आज स्थूल देह से हमारे बीच नहीं हैं, लेकिन **ये विभूतियाँ सनातन हैं—इनके आशीर्वचन भी सनातन हैं।**

साहेब, सद्गुरु भाइयों और भक्तों की अनुपम गुरुभक्ति देख कर वे खूब राजी होते होंगे।

योगी परिवार के हम सभी यह गौरव और गरिमा को संभाल कर, बढ़ाने का उद्यम करते ही रहें—यही आज के शुभ मंगलकारी दिन अभीप्सा और प्रार्थना...

सद्गुरु संतों ने **प.पू. निर्मलस्वामीजी, प.पू. प्रेमस्वरूपस्वामीजी एवं प.पू. बापुस्वामीजी** को महोत्सव की स्मृति भेंट से सम्मानित किया। अंत में



सभी का आभार और 'स्वामिनारायण मंदिर कलश महोत्सव' की जय बुलाते हुए **संतभगवंत साहेबजी** ने निम्न आशीष वर्षा से महोत्सव की पूर्णाहुति की—

...गुणातीत दीक्षा दिन हम सब के लिए शुभ व मंगलकारी दिन है। भगवान स्वामिनारायण ने गुणातीतानंदस्वामी की भेंट देकर हमें निहाल कर दिया... स्वामिनारायण संप्रदाय की नींव स्थापित हुई... संतों व भक्तों के असाधारण प्रेम व समर्पण से मंदिरों का निर्माण संभव हुआ... भगवान स्वामिनारायण ने आशिष दिए कि मैं अपने गुणातीत साधु द्वारा मैं पृथ्वी पर अखंड प्रगट रहूंगा। सो, ऐसे साधु से आत्मबुद्धि व प्रीति से जुड़े रहना। उनकी आज्ञा में रहना व भक्तों के साथ सुहृदभाव रखना...

गुरुदेव शास्त्रीजी महाराज व योगीजी महाराज ने अक्षरपुरुषोत्तम के अनादि स्वरूपों की पहचान कराई... बापा ने जब से मेरा हाथ काकाजी को सौंपा, तब से काकाजी को मैंने बापा का स्वरूप माना। बापा ने हमें दादुकाका की आज्ञा में रहने का आदेश दिया। फिर, 1967 में काकाजी ने हमें पप्पाजी की आज्ञा में रहने का आदेश दिया। पर, काकाजी के प्रति मुझे बहुत प्रेम...

योगीजी महाराज कहते थे— महिमा की कसर के कारण, हमें बार-बार जन्म लेना पड़ता है... सो, योगीजी महाराज ने अपने संकल्प से यह महिमा प्रसारित की कि भगवान सदा साकार, दिव्य व कर्ता-हर्ता हैं। गुणातीत साधु द्वारा वे प्रगट हैं। उनके संबंध वाले दिव्य हैं और उनकी अमहिमा व झंझट में नहीं पड़ना...

गुणातीतानंदस्वामी ने कहा है—

यदि हो सके तो सेवा करना, पर असेवा तो करना ही नहीं। चौधराहट करने जाओगे, तो डंडे पड़ेंगे। संबंध वाले सभी निर्दोष व दिव्य हैं।

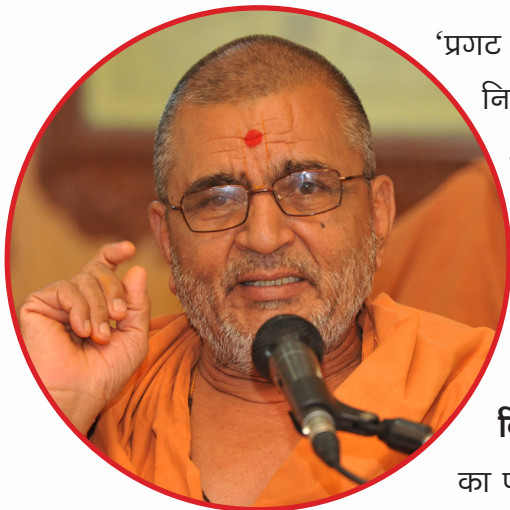
सो, भक्तों के गुणगान व महिमा गाया करें व सुनें। प्रभु को राजी करने के भाव से सेवा करेंगे और भक्तों में निर्दोषभाव रखेंगे, तो हठ, मान और ईर्ष्या के विकार टल जायेंगे। हृदय में भगवान का सुख प्राप्त होगा...

संप, सुहृदभाव व एकता के लिए जो कुछ छोड़ना पड़े, उसे विशिष्ट त्याग कहा जाए। वो करने लग पड़ें, वही सच्चा समर्पण और भक्ति है। ऐसे वर्तने का प्रभु हमें अहोनिश बल, बुद्धि व प्रेरणा दें, यही आज के मंगल अवसर पर प्रार्थना...

यूँ, 'कलश महोत्सव' की अद्भुत स्मृतियाँ सभी ने अपने अंतर में संजो कर शाश्वत् कीं।



ब्रह्मलीन प.पू. शास्त्रीजीस्वामीजी को श्रद्धा सुमन...



‘प्रगट प्रभु’ को ही सर्वस्व मान कर व भजन-भक्ति में निमग्न एवं गुरुहरि योगीजी महाराज के कृपापात्र और गुरुहरि काकाजी, पप्पाजी एवं हरिप्रसादस्वामीजी के लाड़ले **81 वर्षीय प.पू. शास्त्रीस्वामीजी** ने करीब छः महीने से ब्रेइन ट्यूमर की बीमारी ग्रहण की थी। गुणातीत समाज के सभी केन्द्रों में उनकी तबियत का समाचार मिलता रहता था। परंतु, **22 दिसंबर** की सुबह हरिधाम से **प.पू. प्रेमस्वामीजी** का फोन पर प.पू. गुरुजी को संदेश आया —

गुरुजी, आप आज हरिधाम आ ही जाओ।

हालाँकि **गुरुहरि पप्पाजी के 105वें प्राकट्योत्सव** निमित्त **24 दिसंबर** को **प.पू. गुरुजी** विद्यानगर जाने ही वाले थे। लेकिन, प.पू. प्रेमस्वामीजी का संदेश मिलते ही **पू. सुहृदस्वामी**, संतों एवं कुछ सेवकों को साथ लेकर **प.पू. गुरुजी** फ्लाईट से साचं वडोदरा-हरिधाम पहुँच गये। वहाँ **ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामीजी** के समाधि स्थल पर दर्शन व प्रदक्षिणा की और... तभी रात्रि करीब दस बजे **प.पू. शास्त्रीस्वामीजी श्रीजी महाराज के चरणों में विलीन हो गये!** **23 दिसंबर** की दोपहर को हरिधाम के ‘हरिघाट’ पर केन्द्रों के प्रतिनिधियों की हाज़िरी में **प.पू. शास्त्रीस्वामीजी के पार्थिव देह को प.पू. प्रेमस्वरूपस्वामीजी ने मुखाग्नि दी।**

पूर्वाश्रम में सौराष्ट्र के माणावदर गाँव के निवासी पू. पूंजाभाई व पू. गंगाबा के घर पुत्र के रूप में पू. जयंतीभाई अर्थात् **प.पू. शास्त्रीस्वामीजी ने 13 सितंबर 1940 को जन्म लिया।** मेट्रिक तक पढ़ने के बाद, गुरुहरि योगीजी महाराज के प्रेमवश **25 मार्च 1961** को 21 वर्ष की आयु में रामनौमी के मंगलकारी दिन **गोंडल में** उन्होंने **पार्षदी दीक्षा** ली और **11 मई 1961 को गढडा में** इक्यावन योगेश्वरों के साथ **भागवती दीक्षा** प्राप्त की। गुरुहरि योगीजी महाराज ने उन्हें ‘साधु कृष्णचरणदास’ नाम दिया। परंतु, उन्होंने जब ‘शास्त्री’ की पदवी पाई, तब से ‘शास्त्रीस्वामी’ के उपनाम से उनकी पहचान बनी।

दीक्षा के बाद गुरुहरि योगीजी महाराज ने नवदीक्षित संतों को





मुंबई-अक्षरभुवन में प.पू. महंतस्वामीजी की निश्रा में रहने की आज्ञा दी थी। तब प.पू. महंतस्वामीजी के निजी सेवक के रूप में प.पू. शास्त्रीस्वामी उनके साथ रहे और उनसे साधुता के गुर सीख कर उनकी प्रसन्नता पाई।

गुरुहरि योगीजी महाराज की रुचि-अभिप्राय को जान कर-समझ कर काकाजी-पप्पाजी ने 1966 में बहनों के भगवान भजने की क्रांतिकारी योजना का जब आरंभ किया, तो इस कार्य को संप्रदाय की प्रथा के विरुद्ध बता कर संस्था के ट्रस्टियों ने काकाजी-पप्पाजी सहित प.पू. हरिप्रसादस्वामीजी के संग 39 संतों को विमुख ठहरा दिया।

गुरुहरि काकाजी ने इसे गुरुहरि योगीजी महाराज की 'प्रसन्नता का स्रोत' बताया और

गुरुहरि पप्पाजी ने 'विमुख नारायण की जय' बुलाई!

साथ-साथ समाज को समझाया भी कि—विमुख किये नहीं जाते, भक्तों के अभाव-अवगुण व टीका-चर्चा में पड़ कर विमुख हो जाते हैं।

विमुख प्रकरण के बाद गुरुहरि काकाजी के मार्गदर्शन और प.पू. हरिप्रसादस्वामीजी की निश्रा में प.पू. शास्त्रीस्वामीजी अन्य संतों के साथ सोखड़ा के पुराने मंदिर में रहने लगे। बहनों की 'गुणातीत ज्योत' का निर्माण कार्य तो जारी हो ही गया था। सो, सत्संग का

विकास होने पर गुरुहरि काकाजी ने 'सांकरदा' में 1967 में गुणातीत समाज का सर्वप्रथम मंदिर स्थापित कराया। तत्पश्चात् 1974 में 'हरिधाम' मंदिर की नींव रखी गई, जिसके सर्जन और आयोजन की सभी प्रवृत्तियों में प.पू. शास्त्रीस्वामीजी का अद्भुत योगदान रहा। प.पू. शास्त्रीस्वामीजी बहु प्रतिभावान थे, लेकिन





उन्होंने अपनी प्रतिभा की कभी अभिव्यक्ति नहीं होने दी। कभी भी अपना नाम, कीर्ति, मान या वाहवाही जुटाने के लिये सेवा नहीं की, बल्कि एकमात्र प.पू. स्वामीजी को राज़ी करने की भावना से जुटे रहे। संप्रदाय की मान-मर्यादा को संजोये रखते हुए किसे किस सेवा से उन्होंने प.पू. स्वामीजी से जोड़ा, उसका किसी को ख्याल तक नहीं पड़ने दिया। गुणातीत साधुता का सबसे बड़ा गुण यही माना जाता है।

गुरुहरि योगीजी महाराज का ब्रह्मवाक्य —

बड़े पुरुष की ओर से कोई आज्ञा आये, तो ना नहीं करना। कुछ न आता हो, तो भी ना नहीं कहना। यदि ना नहीं कहेंगे, तो हम में बड़े पुरुष बरक़त दे देंगे...

यह उनके जीवन का आधार बना और वे **प.पू. स्वामीजी का प्यादा बन कर जिये**। प.पू. स्वामीजी उन पर संपूर्ण अधिकार करके कुछ भी कह सकते थे। उन्हें कोई भी सेवा सौंप कर निश्चित हो जाते थे। **प.पू. स्वामीजी उन्हें 'किशन' नाम से संबोधित करते।**

साधकों के उत्थान के लिये क्या ज़रूरी है, उसका शास्त्रीस्वामी को ख्याल था, इसलिये कई जगह वे अनुशासक बने। हेत, माया, दया एवं प्रीति में कभी खींचे नहीं गये। मुक्तों को भक्तिरूप कला सिखाई। **विभिन्न सेवाओं में साधकों को मार्गदर्शन दिया।**

यूँ अत्यधिक सहजता, सरलता से मंदिर की प्रवृत्तियों में स्वयं व्यस्त रहे और अन्यो को भी रखा। परंतु भीतर से तो निवृत्त जैसे रहे। उनका संग सबको जँचता था। **उनके दिल से कोई हटता नहीं था, क्योंकि मातृत्व का वे स्वरूप थे।** अपने प्रेम से उन्होंने सबको साधुता का पाठ पढ़ाया। किसी भी सेवा में उनके मुख पर थकान या अरुचि दिखाई नहीं दी। प्रत्येक परिस्थिति में वे समता से जिये। प्रसंगों को हमेशा साधक की अदा से निहारा।



गुरुहरि काकाजी के प्रति उन्हें विशिष्ट लगाव था, उनकी कई स्मृतियाँ ईदम् थी। 2013 मार्च में प.पू. गुरुजी के प्राकट्योत्सव निमित्त वे दिल्ली मंदिर आये थे। तब दो-तीन दिन सभा में उन्होंने गुरुहरि काकाजी एवं प.पू. गुरुजी के कई प्रसंगों का स्वमुख से लाभ दिया। निम्न प्रसंग गुरुहरि काकाजी के साक्षात्कार को प्रमाणित करता है—

प.पू. शास्त्रीस्वामीजी के शब्दों में ही पढ़ें—

“अक्षरभुवन (दादर-मुंबई) में हम, गुरुजी सब साथ में रहते थे। एक बार बरसात के मौसम में बापा वहाँ आये हुए थे। वहाँ का हॉल एल आकार का था और उसके एक कोने में कपड़े सुखाने के लिये तार बांधे हुए थे। दोपहर को मैं सूखते हुए धोती-गातरिये को आगे-पीछे करने गया कि थोड़ी ही देर में काकाजी प.पू. प्रमुखस्वामी महाराज के साथ बात करते हुए उस ओर आये। उन्हें ख्याल नहीं था कि मैं कपड़ों के पीछे खड़ा हूँ और मुझे भी ऐसा नहीं था कि छिप कर उनकी बातें सुननी थी। परन्तु वहाँ से जाने में मुझे हिचकिचाहट हुई। तब मैंने सुना कि वे काकाजी से कह रहे थे कि पुराने हरिभक्त कहते हैं कि दादुभाई योगीजी महाराज की महिमा गाकर शास्त्रीजी महाराज को गौण करते हैं। यह सुन कर काकाजी खूब हँसे और बोले कि मुझे भी ख्याल है कि वे ऐसा कहते हैं। पर, मुझे योगीजी महाराज ने साक्षात्कार करा कर अक्षरधाम का जो दर्शन कराया, उसमें अक्षरधाम के तख्त पर जो महाराज थे, उनकी जगह पहले शास्त्रीजी महाराज आये और फिर योगीजी महाराज आये। यूँ तीनों का मुझे दर्शन हुआ है। इन तीनों में मुझे कोई भेद दिखाई नहीं दिया। सो, मेरे अंतर में जो भेद था, वो उड़ गया। संस्था में हम सबको आपकी आज्ञा में रहना है, तो जैसा आप कहोगे वैसा करूँगा। यह सुन कर प.पू. प्रमुखस्वामी महाराज एक भी शब्द बोले बिना वहाँ से चले गये।”

उनकी चुप्पी ने ख्याल दे दिया कि गुरुहरि काकाजी ने ‘योगी भगवान हैं...’ का जो बिगुल बजाया था, उसमें संशय की कोई गुंजाईश ही नहीं थी।

इसी प्रकार, प.पू. शास्त्रीस्वामीजी द्वारा बताया अन्य निम्न प्रसंग प्रतीति कराता है कि कई सात्त्विक भावों को वे साधुता की शान मानते थे, पर दरअसल साधक के लिये वो बाधारूप हैं।



उसका दर्शन करा कर गुरुहरि काकाजी ने उसको ढाला भी।

“शास्त्री बनने के द्वितीय खंड का एक वर्ष गुरुजी का बाकी था। सो, उनकी जोड़ में एक महीने के लिये मैं ताड़देव गया।

एक दिन काकाजी ने मुझसे कहा— एकादशी आ रही है। तुम किस प्रकार एकादशी करते हो? मैंने कहा— उपवास में मैं कुछ नहीं लेता।

तब काकाजी ने कहा— एक काम करना, तुम एक बार तो शरबत पीना।

काकाजी और स्वामीजी सत्त्वगुण के कट्टर विरोधी थे। बाहर जगत में सत्त्वगुणी होना एक उपलब्धि कहा जाये कि फलां व्यक्ति अच्छा है। जबकि इन दोनों विभूतियों को इसकी कोई अहमियत नहीं थी।

काकाजी ने मुझसे कहा— तुम सत्त्वगुणी हो।

मैंने कहा— आप कुछ प्रकाश डालें, तो ख्याल आये कि सत्त्वगुण क्या होता है?

फिर जब एकादशी आई, तो उस दिन सुबह ताड़देव में **सोनाबा के पैत्रिक भाई गोविंद मामा और अंबरीषभाई** ताड़देव आये। वे भले सोनाबा के रिश्तेदार थे, लेकिन वे **संस्था से जुड़े हुए थे। सो, वे धर्म-नियम के पक्के थे।**

काकाजी ने तो उन्हें प्रेम से कहा— ओहो, मामा आप भांजे से मिलने आये।

आप क्या लोगे?

उन्होंने कहा— आज तो एकादशी है।

काकाजी ने कहा— कुछ फलाहार तो लोगे?

उन्होंने कहा— हाँ, वो लूँगा।



काकाजी ने कहा—फलारी फाफड़ा लोगे न?

उनके आने से पहले नीचे कोई फाफड़ा बेचने आया था, तो काकाजी ने राजुभाई भट्ट से कहा कि फाफड़ा लेकर रसोई में आना। मुझे मन में हुआ कि भला फाफड़े भी क्या फलारी बनते होंगे? एक तो समाज में हमारी ऐसी छाप थी कि ये बाज़ार का सब खाते हैं। पर, मैं कुछ बोला नहीं, फाफड़ा आने के बाद





काकाजी ने मुझे वो प्लेट में लगा कर लाने के लिये कहा। वह हॉल में काकाजी को देकर मैं रसोई में चला गया। दरअसल काकाजी को मुझे एक दर्शन कराना था।

तो, काकाजी ने मुझे बुला कर कहा—

हमारे पाटीदार में एक रिवाज़ है कि जब तक मेहमान भोजन करे, तब तक वहाँ बैठना चाहिये। तो तुम्हें यहाँ बैठना चाहिये।

मैं वहाँ बैठा रहा। गोविंदभाई वगैरह ने नाश्ता किया और काकाजी के चरण स्पर्श करके चले गये। रात को काकाजी ने मुझसे पूछा—तुझे सत्त्वगुण का ख्याल पड़ा? मैंने कहा— नहीं।

काकाजी ने मुझसे कहा—देख, उन्होंने फाफड़े खाये न! खिलाने वाले ने खिला दिये और खाने वाले ने खा लिये, पर बीच में तू हिल गया, वह सत्त्वगुण!

यूँ, गुरुहरि काकाजी ने प.पू. शास्त्रीस्वामीजी के ज़रिये साधक के जीवन में बाधारूप होती बारीक-बारीक कणियों से हमें अवगत कराया और... कोटि-कोटि धन्यवाद प.पू. शास्त्रीस्वामीजी को कि समय-समय पर उन्होंने साधक वर्ग को वो परोसा। फलस्वरूप हमें अपने प्रगट प्रभु एवं सत्संग को दिव्यभाव से निहारने की दृष्टि मिली है।

गुणातीत समाज के शिरछत्र एवं हरिधाम मंदिर के प्राण समान **ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामीजी** को स्थूल देह से अंतर्धान हुए छः महीने भी नहीं हुए, तब प.पू. शास्त्रीस्वामीजी का अक्षरनिवासी होना, केवल हरिधाम-सोखड़ा मंदिर के लिये ही नहीं, बल्कि समग्र गुणातीत समाज के लिये भारी खोटा कही जाये। इस कमी की पूर्ति तो संभव नहीं, लेकिन उनके नक्शेकदम पर निरंतर चलने का प्रयास ही उन्हें जीवंत रखने का साधन है और सच्ची श्रद्धांजली भी कही जायेगी...



Statement about ownership and other particulars about newspaper—

‘भगवत् कृपा’ (Form IV Rule 8)

1. Place of Publication : **Yogi Divine Society**, 'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar- III, Delhi-52
2. Periodicity of its Publication : Bi-Monthly
3. Printer's Name : Prabhaker Rao
4. Nationality : Indian
Address : 'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar - III, Delhi-52
5. Publisher's Name :
Nationality : As above
Address :
6. Editor's Name :
Nationality : As above
Address :
7. Owner's Name : Yogi Divine Society
Nationality : Indian
Address : 'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-110 052

I, Prabhaker Rao, hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

Sd/- PRABHAKER RAO
Signature of Publisher

Date: 21 February, 2022

व्रतोत्सवसूची

- (1) दि. 27.2.'22, रविवार — एकादशी, व्रत
- (2) दि. 1.3.'22, मंगलवार — महाशिवरात्रि व्रत
- (3) दि. 3.3.'22, गुरुवार — प.पू. गुरुजी की 85वीं प्राकट्य तिथि
- (4) दि. 7.3.'22, सोमवार — गुरुहरि काकाजी महाराज का स्वधामगमन दिन
- (5) दि. 13.3.'22, रविवार — प.पू. गुरुजी का 85वाँ प्राकट्य दिन
- (6) दि. 14.3.'22, सोमवार — एकादशी, व्रत
- (7) दि. 17.3.'22, गुरुवार — होली, अनादि महामुक्त भगतजी महाराज की जयंती
- (8) दि. 18.3.'22, शुक्रवार — धुलेन्डी, संतभगवंत साहेबजी का प्राकट्य दिन
- (9) दि. 28.3.'22, सोमवार — एकादशी, व्रत
- (10) दि. 10.4.'22, रविवार — रामनौमी, भगवान स्वामिनारायण जयंती

R.N.I. 28971/77 (Air Mail)

'Bhagwatkripa' Bimonthly Magazine—Despatched on 15th of alternate months

If undelivered please return to :—

Printer, Publisher, Editor : **SHRI PRABHAKER RAO FOR YOGI DIVINE SOCIETY- DELHI**

'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 4709 1281

Printed at : **D.K. FINE ART PRESS (P) LTD., A-6, Community Centre, Nimri Colony, DELHI-110 052**